जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 28 संख्याः 338 प्रभात अजमेर, रविवार 7 जुलाई, 2024 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

काफी रोचक रहेगा जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव इस बार

भाजपा अपने घोषणा पत्र में वादा कर रही है कि, पाकिस्तान से पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) वापस लेगी

- श्रीनंद झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जम्मू व कश्मीर के आगामी विधान सभा चुनावों में भाजपा अपने चुनावी घोषणापत्र में पाकिस्तान के कब्जे वाले भाग "पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर" को "वापस अपने कब्जे" में लेने का वादा शामिल कर सकती है।

केन्द्र सरकार को लगता है सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित 30 सितम्बर की मियाद तक देश के उत्तरी राज्यों में चुनाव कराने के आदेश का सम्मान करने को तैयार है। पिछले साल 11 दिसम्बर को सुप्रीम कोर्ट ने देश के चुनाव को 30 सितम्बर 2024 तक चुनाव कराने का निर्देश दिया था। उम्मीद की जाती है कि चुनाव आयोग वर्तमान में चल रही अमरनाथ यात्रा के 19 अगस्त को समाप्त होने के बाद चुनावों की तारीखों का ऐलान करेगा।

कुछ समय पहले एक साक्षात्कार गृहमंत्री अमित शाह ने 30 सितम्बर तक इस वर्ष वादा किया था और चुनाव कराने का और इसके बाद राज्य का दर्जा बहाल करने का वादा किया था। वर्ष

- लग रहा है कि, भाजपा गंभीर है कि, सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अनुपालना में 30 सितम्बर से पहले जे. एण्ड के. में विधानसभा चुनाव संपूर्ण हो जायें।
- ऐसा लग रहा है कि, 19 अगस्त को अमरनाथ यात्रा पूरी हो जाने के बाद, चुनाव का कार्यक्रम घोषित कर दिया जायेगा। इस बार जे. एण्ड के. विधानसभा की सीटें बढ़ाकर 114 कर दी गईं, इनमें 24 सीटें पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) में हैं।
- चुनाव की तैयारी में जे. एण्ड के. के भाजपा के प्रभारी किशन रेड्डी और तरूण चुग ने रणनीति तैयार करने के लिये प्रदेशाध्यक्ष से मंत्रणा शुरु कर दी है तथा नड्डा भी श्रीनगर जा रहे हैं, प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में भाग लेने।
- पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती की हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में अनंतनाग-रजौरी में तथा उमर अब्बदुल्लाह की अपनी लोकसभा सीट पर पराजय से भाजपा काफी उत्साहित है।

2019 में, जम्मू व कश्मीर को दो भागों में बांट दिया गया था और इसको केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया था। अभी हाल ही में भाजपा की तरफ से जम्मू व कश्मीर में राजनीतिक गतिविधियों को तीव्र गति से बढ़ाया गया है। पार्टी के प्रदेश चुनाव प्रभारी जी. किशन रेड्डी व प्रभारी तरुण चुघ ने हाल ही में जम्मू में राज्य के भाजपा नेताओं के साथ चुनावी रणनीति को लेकर बैठक की थी।

इस बीच, भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा शनिवार को जम्मू के दौरे पर गए, जहां वे प्रदेश भाजपा की कार्यकारिणी समिति की बैठक को सम्बोधित करेंगे।

भाजपा जम्मू व कश्मीर में चुनावों से पूर्व कोई गठबंधन किए बगैर विधानसभा की 90 सीटों पर अपने दम पर अकेले चुनाव लड़ने की योजना बना रही है परन्तु संभावना है कि चुनावों के पश्चात "समान विचारधारा वाली पार्टियों" के साथ गठबंधन अस्तित्व में आ सकता है।

इस सप्ताह के पूर्वार्ध में, भाजपा के वरिष्ठ नेता जे.पी.नड्डा व अमित शाह ने प्रदेश इकाई के नेताओं के साथ पार्टी की चुनावी रणनीति पर चर्चा की थी और इसके साथ ही उन्हें चुनावों के लिए "तैयार रहने" का निर्देश दिया था। संयोगवश, राज्य की विधानसभा में सीटों की संख्या बढ़कर 114 हो गई है इनमें से 24 सीटें पाकिस्तान अधिकृत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

केन्द्रीय बजट 23 जुलाई को पेश होगा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए केंद्रीय बजट 23 जुलाई को लोकसभा में पेश किया जाएगा। वहीं संसद का बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित किया जाएगा। तारीखों की घोषणा संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने की।

रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत की माननीय राष्ट्रपति ने

- केन्द्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिये बताया कि बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित होगा।

भारत सरकार की सिफारिश पर बजट सत्र, 2024 के लिए संसद के दोनों सदनों को 22 जुलाई, 2024 से 12 अगस्त, 2024 तक बुलाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पूर्ण बजट पेश करेंगी। उन्होंने 1 फरवरी को संसद में अंतरिम बजट पेश किया गया था। लगातार दूसरे कार्यकाल के लिए केंद्रीय वित्त मंत्री के रूप में नियुक्त की गईं सीतारमण लगातार सात केंद्रीय बजट पेश करने वाली पहली शख्सियत बन जाएंगी। वह मोरारजी देसाई को पीछे छोड़ देंगी जिन्होंने लगातार छह बजट पेश किए थे। बता दें कि आम चुनाव 2024 के बाद 24 जून से संसद का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्यपाल व विधानसभा स्पीकर के बीच अहम् की लड़ाई हास्यास्पद स्थिति तक पहुंची

उपचुनाव जीतकर आए दो नये विधायकों को शपथ कौन दिलायेगा, इसका हल संविधान तथा विधानसभा की परम्पराओं के बीच लटकता रहा

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) और राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस के बीच चल रहा विवाद टी.एम.सी. के दो और विधायकों के शपथ ग्रहण के बाद आज और गहरा गया। राज्य विधानसभा के स्पीकर बिमान बनर्जी द्वारा सयंतिका बनर्जी और रेवात हुसैन सरकार को विधायक पद की शपथ दिलाने के बाद राज्यपाल ने सत्तारूढ़ पार्टी की आलोचना की।

सयंतिका बनर्जी और सरकार क्रमशः बड़ानगर और भगवानगोला निर्वाचन निर्वाचन क्षेत्रों से उपचुनाव जीते थे। इन उपचुनावों के नतीजे गत 5 जून को घोषित हुए थे। इनका शपथ ग्रहण तभी से लम्बित था, लेकिन सत्तारूढ़ तृणमूल और राज्यपाल कार्यालय के कारण इस पर सभी का फोकस था। स्पीकर बिमान बनर्जी ने अन्ततः उन्हें शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के बाद तृणमूल के

- मतगणना के बाद, रिज़ल्ट घोषित हो गया था, पर, राज्यपाल ने व्यवस्था दी कि दोनों नये विधायक उनके निवास पर आकर शपथ ग्रहण करें तथा शपथ दिलाने की जिम्मेवारी राज्यपाल ने डिप्टी स्पीकर को दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने राज्यपाल को नीचा दिखाने की दृष्टि से विधानसभा का विशेष सत्र आहूत कर स्वयं नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिला दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने दलील दी कि, विधानसभा केवल रूल्स से ही नहीं, संविधान के अनुसार चलती है।
- चर्चा है कि, शायद मामला सुप्रीम कोर्ट तक जाये।

विधायकों ने सदन में "जय बांग्ला" के नारे लगाए।

तथापि, उसके बाद राज्यपाल बोस ने कहा कि राज्यपाल के दफ्तर द्वारा उनके अधीनस्थ आशीष बनर्जी की नियुक्ति किए जाने के बावजूद स्पीकर ने शपथ दिलवाकर संवैधानिक प्रक्रिया का उल्लंघन किया है। फिर भी, आशीष बनर्जी ने यह उल्लेख कर ऐसा करने से इंकार किया कि स्पीकर द्वारा शपथ दिलाये जाने के पूर्व उदाहरण मौजूद हैं।

बोस ने कहा है कि "स्पीकर द्वारा दो नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाये जाने से हुई संवैधानिक अनीति को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को एक रिपोर्ट भेजी जाएगी।' बोस ने सोशल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को विदेश पढ़ने भेजेगी तेलंगाना सरकार

मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी ने अल्पसंख्यकों के लिए एक कल्याणकारी योजना घोषित की है

- लक्ष्मण वैंकट कुची -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। तेलंगाना में रेवन्त रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार अल्पसंख्यकों के लिये एक रूटीन कल्याणकारी योजना लेकर आई है जिसे लेकर विपक्षी भाजपा इसे "अल्पसंख्यक तुष्टीकरण" बताते हुये, जबरदस्त प्रहार कर सकती है। राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री की "ओवरसीज स्कॉलरशिप स्कीम" के तहत, अल्पसंख्यक विद्यार्थियों से विदेश में अध्ययन करने में सहयोग/सहायता के लिये आवेदन पत्र मांगे हैं। यह योजना के चन्द्रशेखर राव के नेतृत्व वाली तेलंगाना राष्ट्र समिति सरकार ने 2015 में आरम्भ की थी।

19 मई, 2015 को राज्य सरकार ने एक विस्तृत गवर्नमैंट ऑर्डर एमएस नं. 24 के तहत यह योजना शुरू की थी। इसका उद्देश्य विदेशों में उच्च अध्ययन के लिये अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को सहयोग देना था। यह योजना अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, कैनाडा, सिंगापुर,

- यह योजना मई 2015 में तात्कालीन मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने घोषित की थी जिसके तहत अल्पसंख्यकों को विदेशों में पढ़ने के लिए 20 लाख रूपए तक की सहायता दी जाती है।
- राज्य सरकार ने कहा है कि, छात्रवृत्ति के लिए 8 जुलाई से 7 अगस्त तक आवेदन किया जा सकेगा।
- राज्य सरकार के इस फैसले ने भाजपा को कांग्रेस पर "मुस्लिम तुष्टीकरण" का आरोप लगाने का मौका दे दिया है।

जर्मनी, दक्षिण कोरिया, जापान, फ्रांस तथा न्यूजीलैंड के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पोस्ट ग्रेजुएट तथा पी.एचडी. कोर्स करने में पात्र अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की मदद करती है। इस योजना के अन्तर्गत चयनित उम्मीदवारों को 20 लाख रुपए तक की छात्रवृत्ति या वास्तविक ट्यूशन फीस, जो भी कम हो, प्रदान किए जाते हैं।

राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी की है कि 'स्प्रिंग ऑफ 2024' के लिये आवेदन पत्र स्वीकार किए जायेंगे। अधिसूचना के अनुसार आवेदन खिड़की 8 जुलाई से 7 अगस्त तक खुली रहेगी तथा जिन पात्र विद्यार्थियों ने 1 जनवरी से 31 जुलाई के बीच प्रवेश सुनिश्चित कर लिया है, उन्हें आवेदन करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

वस्तुतः राज्य सरकार केवल अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों की ही मदद नहीं कर रही है, बल्कि विदेश

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका में आज़ादी के जश्न में गोलीबारी, 33 मरे

कैलिफॉर्निया, 6 जुलाई। अमेरिका में हर साल की तरह इस बार भी 4 जुलाई को लोगों ने अपने परिवार और दोस्तों के साथ आजादी का जश्न मनाया। इस दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में गोलीबारी और हिंसा की घटनाओं में 33 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा 11 लोग शिकागो में मारे गए।

- अमेरिका में चार जुलाई को आयोजित "इंडिपैंडैंस डे" समारोहों में देश भर में कई जगहों पर नागरिको द्वारा गोलियां चलाने की घटनाएं सामने आईं।

शिकागो सनटाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, शिकागो में गोलीबारी में 11 लोग मारे गए और 55 अन्य घायल हो गए। इसमें दो महिलाएं और एक 8 वर्षीय लड़का शामिल है। उधर, कैलिफोर्निया के हंटिंगटन बीच में स्वतंत्रता दिवस पर आतिशबाजी शो खत्म होने के दो घंटे बाद एक हमले में दो लोग मारे गए। उधर, क्लीवलैंड में एक 10 वर्षीय लड़की की हत्या कर दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने के.सी.आर. को दिखाया "जैसी करनी वैसी भरनी"

तेलंगाना में पूर्व मुख्यमंत्री के.सी.आर. ने कांग्रेस के साथ जो किया अब रैवन्त रेड्डी बी.आर.एस. के साथ वही कर रहे हैं

- लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जानी-मानी कहावत है जैसी करनी वैसी भरनी। आप किसी के साथ जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही व्यवहार उससे बदले में पाओगे, और यह बात बिलकुल पक्की है खास तौर से राजनीति में।

तेलंगाना के पूर्व शक्तिशाली मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने जो व्यवहार पूर्व में कांग्रेस के साथ किया था आज वही उनको तकलीफ दे रहा है।

पिछले दस वर्षों से भी अधिक समय से उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को तोड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी और इस दल को तोड़कर एक छोटे से समूह में बदल दिया था और इस प्रकार विधानसभा में अपने विधायकों की संख्या बढ़ाकर राज किया तथा संसद के चुनावों में भी उनकी संख्या में वृद्धि हुई है। चुनावों में कांग्रेस के जो विधायक निर्वाचित हुए थे उन्हें कांग्रेस से तोड़कर अपनी पार्टी में शामिल कर लिया और एक बार स्थिति ऐसी बन गई मानों

- बी.आर.एस. के राज्यसभा सदस्य केशव राव एवं बी.आर.एस. के विधायकों को रैवन्त रेड्डी पहले ही कांग्रेस में शामिल कर चुके हैं और हाल ही में इसी पार्टी के दस विधान परिषद सदस्यों को भी रेड्डी ने कांग्रेस की सदस्यता दिलवाई है।
- बी.आर.एस. के वर्किंग प्रैसिडैंट के.टी. रामाराव ने इस दलबदल को लेकर कांग्रेस पर कटाक्ष किया कि, कांग्रेस ने अपने मैनिफैस्टो "न्याय पत्र" में दल-बदल रोकने के लिए संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन की बात कही है। क्या यही है कांग्रेस का न्याय पत्र?
- ज्ञातव्य है कि, जब के.सी.आर. मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने कांग्रेस के बहुत सारे नेताओं को तोड़ा, यहां तक कि, प्रदेश में कांग्रेस एक छोटा सा समूह बनकर रह गई थी। राज्य में दो ही पार्टियाँ बची थीं सत्तारूढ़ बी.आर.एस. और विपक्षी भाजपा।
- पर, जैसे ही रैवन्त रेड्डी ने तेलंगाना में कांग्रेस की कमान संभाली तो हालात बदलने लगे। वे एक-एक कर न केवल कांग्रेसियों को वापस लाए बल्कि मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने बी.आर.एस. में भारी तोड़-फोड़ मचा दी है।

तेलंगाना प्रदेश में केवल दो ही पार्टियां रह गई हों।

सत्ताधारी बी.आर.एस. तथा अपने को मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में पेश कर रही भाजपा और कांग्रेस के लोग बी.आर.एस. व भाजपा में चले गए थे।

जब तक रैवन्त रेड्डी ने कांग्रेस की कमान नहीं संभाली थी यही स्थिति थी। रेड्डी ने कांग्रेस के अध्यक्ष बनते ही पार्टी का पुनर्गठन करना शुरू कर दिया और अपनी पार्टी के पुराने साथियों को वापस पार्टी में लाना शुरू कर दिया।

के.सी.आर. को प्रदेश की सत्ता से बाहर करने के बाद, रेवन्त रेड्डी ने चुपचाप पार्टी के पुराने सहयोगियों को मनाकर वापस लाने का कार्यक्रम शुरू किया और अब वे बी.आर.एस. के नेताओं को तोड़ रहे हैं। बी.आर.एस. के एक वरिष्ठ नेता के. केशव राव के पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कश्मीर में दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गये

श्रीनगर, 6 जुलाई (वार्ता) जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में शनिवार को दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए और एक सैनिक शहीद हो गया।

- यह मुठभेड़ ऐसे समय पर हुई है जब कश्मीर में अमरनाथ यात्रा चल रही है। मुठभेड़ में एक भारतीय सैनिक शहीद हो गया।

अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कुलगाम में दो मुठभेड़ें ऐसे समय में हुई हैं जब अनंतनाग जिले में नुनवान-पहलगाम मार्ग और गंदेरबल जिले में बालटाल मार्ग से पिछले शनिवार को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा के कारण पूरे जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। दोनों मार्गों से तीर्थयात्रियों को कुलगाम जिले से होकर गुजरना पड़ता है। अधिकारियों ने बताया कि पहली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों रु. का घोटाला करने का आरोप लगाया डॉ. किरोड़ीलाल ने

डॉ. मीणा ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला देते हुए मु.मंत्री भजनलाल को गत 16 मई 2024 को लिखित शिकायत करते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की थी

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 6 जुलाई। कैबिनेट मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में राजस्थान राज्य भंडारण निगम द्वारा कल्पतरू समूह की कंपनी श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. को टैंडर देने की आड़ में अरबों रुपये का घोटाला करने का आरोप लगाया है।

डॉ. किरोड़ीलाल ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. की रिपोर्ट का हवाला देते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को गत 16 मई 2024 को शिकायती पत्र लिखते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की।

राजनैतिक गलियारों में डॉ. किरोड़ीलाल मीणा द्वारा अचानक इस्तीफा देने को लेकर अलग-अलग चर्चाएं हैं। चर्चाएं यह भी हैं कि, मंत्री किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए दिया है, कि पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में हुए अरबों रुपये के घोटाले उजागर करने के बाद भी मौजूदा भाजपा सरकार इस पर कोई सख्त एक्शन नहीं ले रही है।

दूसरी चर्चा यह भी है कि, डॉ. किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए भी दिया है कि, उनके प्रभाव क्षेत्र में भाजपा ने लोकसभा चुनाव-2024 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। किरोड़ीलाल स्वयं भी चुनाव के दौरान व बाद में भी कई बार कह चुके थे कि, अगर उनके क्षेत्र से भाजपा ने जीत दर्ज नहीं की तो वह मंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे।

- किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था। तथापि, शर्तों की पालना नहीं करने के बावजूद कंपनी से 120 करोड़ रु. की पैनल्टी नहीं वसूली गई।
- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में भी भंडारण निगम के अधिकारियों द्वारा इन दोनों कंपनियों पर मेहरबानी दिखाने और उन्हें करोड़ों रु. का फायदा पहुंचाने की बात कही गई है, जिससे किरोड़ीलाल के आरोप सत्यापति होते हैं। लेखाकारों ने बैंक गारंटी, कंपनी से पैनल्टी वसूली व अन्य प्रकरणों को लेकर जब विभाग से जवाब मांगा तो हर बार असंतोषजनक जवाब पाया।
- ऑडिट रिपोर्ट में ऑडिटर्स ने कई गंभीर गलतियां पकड़ीं, जिसमें श्री शुभम लॉजिस्टिक व ऑरिगो कंपनी को नाजायज लाभ पहुंचाने का प्रयास स्पष्ट हुआ है। स्टेट वेयर हाऊसिंग कॉर्पोरेशन इन आपत्तियों में से एक का भी संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया।

परन्तु इस घटनाक्रम के बीच, किरोड़ीलाल ने पिछली सरकार के जो घोटाले उजागर करने का दावा किया था, क्या वह पूर्णतः काल्पनिक थे अथवा उनमें कोई बड़ी सच्चाई थी?

किरोड़ीलाल मीणा ने गत 16 मई 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को जो पत्र लिखा था, उसमें 21 जनवरी 2024 को वरिष्ठ उपलेखाकार संजीव सुराणा की ओर से राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला दिया था। किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, इस रिपोर्ट के मुताबिक, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था।

इस अनुबंध के मुताबिक गोदामों की वार्षिक उपयोगिता 70 प्रतिशत से कम रहने पर नुकसान की भरपाई इन दोनों कंपनियों से की जानी थी। किरोड़ीलाल का कहना है कि, वर्ष 2023-24 में डिफैक्ट की यह रकम करीब 120 करोड़ रु. वसूली जानी है। इसके बावजूद भंडारण निगम ने यह वसूली कंपनी से नहीं की, उल्टा श्री शुभम लॉजिस्टक कंपनी ने राजस्थान सरकार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में परिवाद दायर कर दिया और अब कुछ अधिकारी अदालत में राज्य सरकार के पक्ष में कमजोर पैरवी कर रहे हैं।

किरोड़ीलाल मीणा का आरोप था कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के मुताबिक कंपनी द्वारा किराये पर लिए जाने वाले गोदाम भी भंडारण निगम के माने जाएंगे, इससे निगम को किराये की 70 फीसदी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।

–खलील जिब्रान

आयुर्वेद के रसायन मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुनः आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7–8): चिकित्स्यमानः सम्यक च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुषः।। निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति।। जानी–मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर–उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7–8): विज्ञातं बहुशः सिद्धं विधिवच्चावचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्।। आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूपकल्पितम्। यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्।। बात यहाँ अति–कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5): न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादृते। मरणं चापि तन्नास्ति यन्नारिष्टपुरःसरम्।। किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6): मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्।। कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकल कर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुंचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला–पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान–पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट–निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति–व्यपाश्रय, सत्त्वावजय और दैव–व्यपाश्रय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक–महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5): ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलैः। रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निवार्य्यते।। कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3): ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्। रसायनाद्विना वत्स तान् शृण्वेकमना मम।। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालाँकि कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12): एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की टीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षि अगस्त्य को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.): रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभिः। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरैः।। तीसरा प्रमाण महर्षि–वैज्ञानिकआचार्य चरक द्वारा सोसायटल कोलैप्स या जनपदोध्वंश की स्थिति–हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियाँ–में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13–14): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चविधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुद्धृतैः।। रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव–व्यपाश्रय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उम्रवर्धक हैं (अ.हृ.शा.3.120): दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः। रसायनानि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गणः।।

आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है।

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष–नियामकता पर ठोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र–आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए.कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे कैंसर, न्येरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट–फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसीलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45–60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधाा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाड़ियों के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरेस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियों तथा अपर–रेस्पायरेटरी–ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण–आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी–एंग्जाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी–डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिक्षमत्व बढ़ता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साइंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29: भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्यपाश्रय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य–असाध्य या अरिष्ट की जाँच–परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा–व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

मौसम की मार से प्याज-टमाटर सहित कई सब्जियों के भाव बढ़े

प्याज-टमाटर ही नहीं आलू भी कर रहा आम आदमी की जेब ढीली

- हरी सब्जियां आम आदमी की थाली से दूर होती जा रही है
- सब्जियों के दाम में बढ़ोतरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ा

मौसम की मार से सब्जियों के दामों बढ़ोतरी होने लगी है।

अजमेर, (कासं)। प्रदेश में मानसून का आगमन हो चुका है, ऐसे में प्याज–टमाटर समेत कई सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। मंडी से लेकर खुदरा बाजार तक के दाम में बड़ा असर देखने को मिल रहा है। इस महंगाई की रेस में आलू भी पीछे नहीं है। आलू का दाम 32 से 35 पहुंच गया है। बारिश के कारण किसानों की फसल प्रभावित हुई है। सब्जियों के दामों में भारी उछाल के चलते आम जनता के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई हैं। प्याज–टमाटर ही नहीं अब आलू भी आम आदमी की जेब ढीली कर रहा है, सब्जियों के भाव बढ़ने से अब वे आम आदमी की थाली से हरी सब्जियां दूर होती जा रही हैं।

टमाटर के साथ आलू की कीमते चर्चा में:–मानसून के साथ ही प्याज–टमाटर सहित सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। इस बार टमाटर की कीमतें सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। बाजार में टमाटर का भाव 80 रुपए तो वहीं प्याज की 50 रुपए प्रति किलो मिल रही है, इसके साथ ही आलू जो हर परिवार की थाली का मुख्य हिस्सा होता है, आलू के दाम 40 रुपए प्रति किलो पहुंचने के साथ ही सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महलिाओं की रसोई का बजट बिगड़ गया है। आम आदमी के लिए 40 रुपए प्रति किलो कीमत पर आलू खरीदना भी मुश्किल हो गया है। वहीं हरी सब्जियों के दामों में भी भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है, गंवार फली 160 रुपए प्रति किलो और भिंडी 50 रुपए प्रति किलो, बैंगन 80 रुपए, फूल गोभी 80 रुपए, टिंडे 100 रुपए, तुरई 80 रुपए पहुंच गई है।

दाम बढते से घरेलू बजट पर असर:–सब्जी की कीमतों में बढ़ोतरी से आम उपभोक्ता के बजट से बाहर होने से घरेलू बजट बिगड़ रहा है। किसानों और व्यापारियों का कहना है कि मानसून के कारण सब्जियों की फसल को नुकसान पहुंचा है जिससे उनकी आपूर्ति में कमी आई है। इसके साथ ही परिवहन और भंडारण की लागत भी बढ़ गई है जो कीमतों में वृद्धि का एक अन्य कारण है। इस महंगाई के चलते आम आदमी की परेशानी बढ़ गई है। महिलाओं को घर के बजट में संतुलन बनाना मुश्किल हो रहा है।

मौसम की मार:–पानी लगने की वजह से प्याज अब दागी हो रहा है, जिससे किसानों को ट्रालियां तक यूं ही फैंकनी पड़ रही है। दूसरी ओर आलू की बात करें तो अब की बार पैदावार कम हुई है जिसके चलते दाम बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर मंडी में की जाने वाली खरीद और खुदरा बाजार के दाम में भी अंतर होने के कारण आमजन काफी प्रभावित है। दरअसल, बदले हुए मौसम की वजह से सिर्फ टमाटर, आलू प्याज ही महंगा नहीं बिक रहा है, अन्य सब्जियों की कीमत भी आसमान छूने लगी है। ऐसे में मंडी में खरीद के लिए पहुंचने वाले लोग दाम पूछने के बाद खरीद से पीछे हट रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था के स्तर पर खरीद बजट से बाहर हो रही है।

शिक्षा का मानवता, देश और समाज के कल्याण के लिए अधिकाधिक उपयोग हो : राज्यपाल

- राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने उपाधियां प्रदान की।

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने की तथा सम्मानित अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सभापति प्रोफेसर टीजी सीताराम उपस्थित थे।

इस अवसर पर राज्यपाल मिश्र ने संविधान के मूल कर्तव्यों का वाचन कर समारोह की शुरुआत की एवं उन्होंने 127 विद्यार्थियों को डिग्रीयां एवं 44 स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी पदक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव धीरज सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नए जीवन का आरम्भ है। यह वह समय है जब आप विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करने के लिए सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों नें जो शिक्षा विश्वविद्यालय में प्राप्त की है, उसका मानवता के कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान निर्मित कराने की मंशा यही है कि हम संविधान की उदात्त परम्पराओं से सदा जुड़े रहें। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा अपनी स्थापना के बाद से ही देश में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभा रहा है। तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके लिए हमें विश्वविद्यालयों को इस तरह से तैयार करने की जरूरत है कि वहां नित्य नवीन ज्ञान का प्रसार हो ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से भारत को फिर से विश्वगुरु बन सके। विगत वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को देश–विदेश में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए हैं।

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि देश की जो नई शिक्षा नीति बनी है, उसका मूल भी यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो। इसीलिए शिक्षा नीति में युवाओं को कौशल विकास से जोड़े जाने पर विशेष जोर दिया गया है। विश्वविद्यालयों गुणवत्ता और नवाचार पर लगातार ध्यान केंद्रित करना होगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना है।

समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के विभिन्न सम्बद्ध महाविद्यालयों के निदेशक, प्राचार्य, विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं विद्या परिषद के सदस्य, अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति, राजभवन से अधिकारीं, विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष, कुलसचिव, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी, संकाय सदस्य, शिक्षक, शिक्षाविद्, विद्यार्थी व उनके अभिभावक, प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं आमंत्रित विशिष्ठ अतिथिगणों ने शिरकत की।

सरकारी स्कूलों में लगे प्रबोधक का होगा प्रमोशन

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा के अधीन कार्यरत 2449 प्रबोधकों को जल्दी ही वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत करने की तैयारी शिक्षा विभाग ने कर ली है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) को उनके जिले में पदोन्नति के पात्र प्रबोधकों की संख्या भेजते हुए उनकी अस्थाई वरिष्ठता सूची 10 जुलाई तक अद्यतन करने के निर्देश दिए हैं।

इस अस्थाई सूची पर 3 दिवस में संबंधित प्रबोधकों से आपत्तियां मांगने के बाद 15 जुलाई तक स्थाई वरीयता सूची जारी कर दी जाएगी। 20 जुलाई तक चयन संबंधी कार्यवाही पूरी कर चयन आदेश की हार्ड और सॉफ्ट कॉपी 22 जुलाई तक प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय को वाहक स्तर पर भेजने के निर्देश दिए गए हैं।

पूरे राज्य में कुल 10392 प्रबोधक वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नति के पात्र हैं, जिसमे से वर्ष 2021 में पदोन्नत करने के लिए 5 हजार पद स्वीकृत किए गए थे। शेष रहे 5392 में से अब 2449 पदों पर पदोन्नति की स्वीकृति सरकार ने दी है। जिन नवगठित जिलों में जिला स्थापना समिति का गठन नहीं हुआ है, उन जिलों में पूर्व 33 जिलों के अनुसार ही वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी। जिले में कुल 254 प्रबोधक पदोन्नति के पात्र थे, जिसमें से 122 को वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत किया जा चुका है। शेष 132 प्रबोधकों में से 60 प्रबोधकों को वरिष्ठता के आधार इस बार पदोन्नत किया जाएगा।

राशिफल रविवार 7 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हर्षण योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मेष, बुध–कर्क, गुरू–वृष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज राजयोग और रविपुष्य योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। आज शुक्र उदय पश्चिम रात्रि 9:05 पर होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, मनोरथ द्वितीया व्रत, आषाढ़ी दशहरा और रथयात्रा उत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:24 से 9:07 तक, लाभ–अमृत 9:07 से 12:21 तक, शुभ 2:13 से 3:56 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

मेष

घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये–पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन
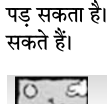
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क
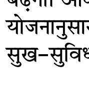
मनःस्थिति ठीक रहेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
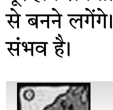
आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक
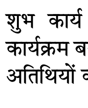
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर

परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मीन
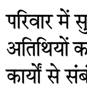
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

आम सूचना

मेरे पिता रामलाल पुत्र नोरत जाट निवासी गांव काचरिया पोस्ट सिलोरा तहसील किशनगढ़ जिला अजमेर की मृत्यु दिनांक 20 मई 1988 को निवास स्थान पर हो गई। इनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिये तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में आवेदन किया है, इस संबंध किसी भी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिवस में अपनी आपत्ति तहसीलदार के समक्ष दर्ज कराये, बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

प्रार्थी- सुखपाल जाट पुत्र रामलाल

आम सूचना

मेरी माताजी कोयली देवी पत्नि कल्याण जाति जाट निवासी ग्राम कटसुरा की मृत्यु दिनांक 01-07-2007 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम कटसुरा में हो गई थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत कटसुरा में नहीं करवाया था। अब मैं मेरी माता कोयली देवी का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अरांई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए जिस किसी को आपति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अरांई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करे। बाद मियाद कोई भी आपति स्वीकार नहीं होगी। -प्रार्थी बद्रीलाल पुत्र कल्याण चौधरी निवासी ग्राम कटसुरा तहसील अरांई हाल निवास दूदू

आम सूचना

प्रत्येक आम व खास व्यक्तियों को इस आम सूचना के जरिये सूचित किया जाता है कि मेरी पक्षकारा श्रीमती परमेश्वरी देवी पत्नि स्वं. रामदास वैष्णव, निवासीनी- पशु चिकित्सालय के पास, किशनगढ़ जिला अजमेर, राजस्थान ने दिनांक 12.06.2024 को 134.55 वर्गगज भूखण्ड पर निर्माणशुदा आवासीय मकान जो कि जामडो का मोहल्ला साई की बेरी के पास मकान क्रय किया है कि अड़ोस-पड़ोस, पूर्व में हरिसिंह का मकान, पश्चिम में आम रास्ता, उत्तर में नन्दकिशोर का मकान तथा दक्षिण में राधेश्याम का मकान है। उपरोक्त अडोस-पडोस में स्थित मेरी पक्षकारान् ने समुचित प्रतिफल देकर गिरिराज सिंह पुत्र देवीलाल, जाति- रावणा राजपूत, निवासी- जामड़ो का मोहल्ला, साई की बेरी के पास, पुराना शहर किशनगढ़ वर्तमान हाल पता डी-90, प्रेमनगर, झोटवाड़ा, जयपुर से क्रय किया है। मेरी पक्षकारान् उक्त क्रय किए गए मकान में विगत 25 वर्षों से निवास करती आ रही है। किसी भी आम या खास को इस विक्रय बाबत् कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना के प्रकाशन से 7 दिवस में मेरी पक्षकारा या अभिभाषक के समक्ष आपति जाहिर कर सकते हैं।

सूचित रहे।

स्थान किशनगढ़ — अभिभाषक

दिनाक 03-07-2024 — स्वाति व्यास एडवोकेट मो. 9460911510

कार्यालय जिला परिवहन एवं सड़क सुरक्षा अधिकारी, जिला भीलवाड़ा (राज.)

क्रमांक/परि/भील/2024–25/ — दिनांक 27/06/2024

नोटिस

वाहन संख्या **RJ06-CF-3229** श्री गोपाल दास वैरागी पुत्र श्री कुका दास बैरागी निवासी–निवासी 100 फीट रोड, श्याम नगर, जिम के पास वाली गली, भीलवाडा नोटिस फार्म 37 पत्र क्र.स. 936 दिनांक 13.06. 2024 फाईनेसरः MAHINDRA & MAHINDRA FIN. SER. LTD.

विषयः फाईनेसर के नाम फ्रेश आर.सी. जारी करने बाबत।

उक्त वाहन के फाईनेसर ने अपने कब्जे में लेकर अपने नाम से फ्रेश आरसी जारी करने हेतु इस कार्यालय में आवेदन किया है कार्यालय के उपरोक्त पत्रांक से रजि0 एडी0 द्वारा नोटिस भिजवाया गया लेकिन अभी तक उसका कोई प्रत्युतर प्राप्त नहीं हुआ तथा न ही किसी प्रकार की आपति/अभ्यावेदन प्रस्तुत हुआ है। समाचार पत्र में पुत्र नोटिस प्रकाशित किया जा रहा है। नोटिस प्रकाशन के सात दिवस तक वाहन की मूल आर.सी इस कार्यालय में प्रस्तुत कर दे या जो भी आपति ६ अभ्यावेदन हो मय साक्ष्य/प्रमाण के अधोहस्ताक्षर कर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर दे। इस अति उपरान्त कोई आपति स्वीकार्य नहीं होगी एवं तत्पश्चात U/S 51 (5) Of CMV ACT 1988 के तहत फाईनेंसर के नाम फ्रेश आर.सी जारी कर दी जायेगी।

जिला परिवहन अधिकारी, भीलवाड़ा (राज.)

कार्यालय ग्राम पंचायत टापरवाडा पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/10 — दिनांक 03.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत टापरवाडा पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0085 — UBN-ZNR2425GLRC00131

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत टापरवाडा, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत टापरवाडा, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत रिड पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/35 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत रिड पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0079 — UBN-ZNR2425GLRC00125

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत रिड, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत रिड, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत पीपलाद पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/16 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत पीपलाद पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0075 — UBN-ZNR2425GLRC00121

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत पीपलाद, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत पीपलाद, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत नेतियास पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/27 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत नेतियास पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0076 — UBN-ZNR2425GLRC00122

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत नेतियास, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत नेतियास, पं.स. परबतसर (नागौर)

चोरों ने एक मकान सहित दो मंदिरों को निशाना बनाया

तीन लाख की नगदी व जेवरात पर हाथ साफ किया

अजमेर, (कासं)। शहर में सक्रिय चोर गिरोह ने एक बार फिर एक साथ दो थाना क्षेत्रों में चोरी की तीन वारदातें अंजाम दे डाली। क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र में एक सूने मकान को निशाना बनाकर करीब तीन लाख रुपए की नगदी सहित जेवरात पर हाथ किया तो वहीं सिविल लाइन थाना क्षेत्र में दो मंदिरों को निशाना बनाया।

पीड़ित मकान मालिक निजी काम से शहर से बाहर गया हुआ था, पीछे से मकान सूना था। पीड़ित पुलिस में अज्ञात चोरों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

■ पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दी, चोरों की तलाश में जुटी पुलिस

क्रिश्चियनगंज थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार क्षेत्र के वैशाली नगर स्थित शिव सागर कॉलोनी की गली नंबर 5 निवासी तोलाराम लालवानी बाईपास सर्जरी के दिल्ली गए हुए थे। पीछे से मकान सूना था, जिसका फायदा उठाते हुए चोरों ने चोरी की वारदात को अंजाम दी। मकान में हुई चोरी की सूचना पड़ोसियों ने जब मकान में संदिग्ध गतिविधि देखी तो उन्होंने तोलाराम के भतीजे सुनील लालवानी को सूचना दी। जब सुनील मौके पर पहुंचा तो मकान के ताले टूटे पड़े थे और अंदर कमरों में सारा सामान बिखरा पड़ा था।

चोरों ने मकान की तलाशी लेकर नकदी और जेवरात पर हाथ साफ कर लिया। लालवानी के भतीजे ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची क्रिश्चियन गंज थाना पुलिस ने घर का मौका मुआयना किया। पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित मकान मालिक के अनुसार चोर घर से करीब तीन लाख रुपए की नगदी सहित जेवरात चुरा ले गए है। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है।

दो मंदिरों के दानपात्र चुराए :- सिविल लाइन थाना क्षेत्र के जयपुर रोड स्थित घूघरा घाटी के पास अज्ञात चोरों ने दो मंदिरों में चोरी की वारदात अंजाम देकर मंदिर में रखे दानपात्र चुरा लिए। चोरी का पता सुबह मंदिर में पूजा करने आने वाले श्रद्धालुओं को लगा तो सिविल लाइन थाना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची सिविल लाइन थाना पुलिस ने मौका मुआयना किया। मंदिर में पूजा करने आई श्रद्धालु पूजा चौहान ने बताया कि अज्ञात चोरों ने मंदिर के दानपात्र और तांबे के घड़े चुरा लिए। इसी प्रकार पास ही हनुमानजी के मंदिर से भी दानपात्र चुरा ले गए। क्षेत्रवासियों ने बताया कि हनुमान मंदिर में पहले भी चोरी की वारदात हो चुकी है। स्थानीय लोगों ने क्षेत्र में नियमित पुलिस गश्त की मांग की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर अज्ञात चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

सिंधी समाज का चालीहा महोत्सव आज से

अजमेर, (कासं)। सिंधी समाज के अराध्य पूज्य झूलेलाल साहिब का चालीहा महोत्सव रविवार 7 जुलाई से शुरू होगा। पूज्य सिन्धी पंचायत अजमेर के महन्त टहलगिरी गोस्वामी एवं महासचिव रमेश लालवानी ने जानकारी देते हुए बताया कि पूज्य झूलेलाल साहिब का संबंध जल एवं ज्योति से है, इसलिए जल एवं ज्योति का पूजन सनातन धर्म एवं संस्कृति के अनुसार किया जाता है। सन्त प्रकाश उदासी ने बताया कि पूज्य झूलेलाल साहिब के चालीहा में चालीस दिन तक पूजन करके लाभ लेने की विधि श्रद्धालुओं को समझाई जाएगी। चालीहा के संयोजक सन्त प्रकाश उदासी ने बताया कि आगामी 16 जुलाई से 25 अगस्त तक पूज्य झूलेलाल साहिब के चालीहा का आयोजन सिन्धी समुदाय के द्वारा मंदिरों, दरबारों में धार्मिक आयोजनों के साथ मनाया जाएगा। सन्त प्रकाश उदासी ने बताया कि दुःख भंजनी हालाधी दरबार श्रीनगर रोड, राजावीर साहिब दरबार, लाल वारी अम्मा, हिम्मत सिंह दरबार के पास, बाबा हरदयाल कुटिया, बाबा हरदयाल दरबार, श्री नगर रोड दरबार, धोला भाटा मन्दिर, महादेव मन्दिर, सिन्धू वाडी सहित अन्य स्थानो पर आयोजन किया जायेगा।

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा आज निकलेगी

बिजयनगर, (निसं)। अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावानामृत संघ बिजयनगर के तत्वावधान में रविवार कोभगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा निकाली जाएगी ।राष्ट्रीय राजमार्ग के समीप स्थित इस्कान मंदिर से रविवार शाम 4: बजे भगवान जगन्नाथ के विग्रह स्वरूप की भव्य रथ यात्रा निकाली जाएगी। इस संदर्भ की जानकारी देते हुए इस्कान मंदिर के अनुयायी विश्वनाथ पाराशर ने बताया कि रविवार शाम इस्कान मंदिर से भव्य रथ यात्रा वर्धबमान कालोनी, तेजस्विनी होटल, राष्ट्रीय राजमार्ग 27 मिल चौराहा, बालाजी मंदिर से होकर निकल जाएगी। रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ की झांकी के साथ इस्कान भक्तों द्वारा संकीर्तन सत्संग के साथ हर्षोल्लास के साथ निकाली जाएगी।

दरगाह बाजार में निगम व यातायात पुलिस की संयुक्त कार्यवाही

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह क्षेत्र में शनिवार को व्यापारियों में उस समय खलबली मच गई, जब मोहर्रम मिनी उर्स को लेकर यातायात पुलिस व नगर निगम की टीम ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए दरगाह सहित आस-पास के क्षेत्रों से अस्थाई अतिक्रमण हटाए। टीम ने दुकानों के बाहर रखे सामान को जप्त कर दुकानदारों को हिदायत दी गई कि मिनी उर्स के दौरान दुकानों का सामान सडक़ पर रखकर अतिक्रमण नहीं करे। यदि आदेशों की पालना नहीं की गई तो नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। नगर निगम सीआई डॉ. रविश कुमार ने बताया कि आगामी मोहर्रम यानी मिनी उर्स के मद्देनजर शनिवार को दरगाह सहित उसके परिधि क्षेत्र में अस्थाई अतिक्रमण को हटाया गया है। मिनी उर्स के दौरान ख्वाजा साहब की दगराह में देश भर से जायरीन जियारत के लिए आते हैं। सडक़ों पर दुकानदारों द्वारा अस्थाई अतिक्रमण कर लिए जाने से यातायात बाधित होता है।

■ अस्थाई अतिक्रमणों को हटाया, सामान किए जब्त, व्यापारियों में मची खलबली

मिनी उर्स से पहले निगम ओर यातायात पुलिस की कार्रवाही।

एक पेड़ मां के नाम वृक्षारोपण किया

आसीन्द, (निसं)। आसींद भारतीय जनता पार्टी आसीन्द नगर व ग्रामीण मंडल के तत्वाधान में गोकुल डेयरी पर डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जन्म जयंती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय जनता पार्टी नगर अध्यक्ष अनिल सिंह तँवर ने बताया कि निर्धन वर्ग के लिए अंत्योदय योजना पर कार्य करना इनका मुख्य लक्ष्य रहा है इसी योजना को हम सब को मिलकर आगे बढ़ाना है। ग्रामीण मंडल अध्यक्ष फौजमल गुर्जर ने बताया कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों को हमे अपने जीवन में अपनाना चाहिए। वही एक पेड़ मां के नाम का आयोजन भी किया गया जिसके अंतर्गत वृक्षारोपण किया गया आगे भी इस कार्यक्रम को संचालित रखा जाएगा। इस मौके पर जिला महिला मोर्चा कैलाश कंवर देथा, भाजपा महामंत्री श्रवण लाल साहू, प्रहलाद राय शर्मा, जगदीश गर्ग, नगर मंत्री लीला वैष्णव पार्षद कालूराम गुर्जर, शेर सिंह तंवर, प्रकाश कुमावत, संदीप टेलर, देवाराम गुर्जर, सुरेश माली आदि उपस्थित थे।

सैटेलाईट स्टेशनों पर रेलों के ठहराव की मांग

अजमेर, (कासं)। श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ के पदाधिकारियों ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर मांग की है कि अजमेर–मेडता वाया पुष्कर रेल मार्ग का कार्य शीघ्र पूर्ण करवाया जाकर तीर्थ यात्रियो के लिए सुविधा उपलब्ध करवाने के प्रबंध किए जाए।

■ पुष्कर मेड़ता रेल मार्ग शीघ्र प्रारम्भ हो मुम्बई ब्यास अमृतसर रेल का नियमित संचालन

श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ के महासचिव रमेश लालवानी ने रेल मंत्री एवं जिला प्रशासन अजमेर और उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक जयपुर और मंडल रेल प्रबंधक व जिला प्रशासनिक अधिकारियो से मांग की है कि आगामी बजट में इलेक्ट्रिक मल्टीपल रेल गाडी ईएमयू अथवा डीजल मल्टीपल रेल गाडी डीएमयू का निरन्तर अजमेर से लगातार संचालन करवाया जाए। महेन्द्र बंसल ने बताया कि ख्वाजा गरीब नवाज की नगरी और जगत पिता ब्रम्हाजी की नगरी अजमेर का व्यवसाय पूर्णतः पर्यटकों और जायरीनों पर आधारित है। यहां देश विदेश के श्रद्धालु व पर्यटकों का आना जाना रहता है।

महासंघ के पदाधिकारियों ने मांग की है कि अजमेर के मुख्य रेलवे स्टेशन पर यातायात का दबाव कम करने के लिए यात्री भार पालबीचला साईड द्वार,सैटेलाईट स्टेशनो पर रेलो का ठहराव करवाने। अजमेर से जयपुर के मध्य,अजमेर से भीलवाडा के मध्य,अजमेर से पुष्कर के मध्य और अजमेर से मारवाड के मध्य डीजल मल्टीपल यूनिट रेलो अथवा इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट रेलो का निरन्तर रेल संचालन करवाने के प्रबंध किया जाए।

'आग लगाने वाले नहीं आग बुझाने वाले बनो'

अजमेर, (कासं)। विद्यासागर तपोवन में चल रहे भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव में शनिवार को आचार्य विशुद्ध सागर महाराज के शिष्य अनुपम सागर महाराज ने कहा कि आग लगने वाले नहीं आग बुझाने वाले बनो जीवन में कई बार ऐसा होता है हम बिना किसी कारण के उलझ जाते हैं हम जीवन को सुलझाने आए हैं। बड़ा धड़ा पंचायत के तत्वाधान में चल रहे इस महोत्सव में संपूर्ण अजमेर जैन समाज भाग ले रही है।

भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सवः मुनि अनुपम सागर महाराज के सानिध्य में भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ हुआ दो दिवसीय महोत्सव में शनिवार को प्रथम विधान मंडल पूजन की गई, जिसमें प्रदीप सरस्वती पाटनी सोधर्म इंद्र बने मनीष वर्षा सेठी कुबेर इंद्र अरुण नीलम सेठी ईशान इंद्र बने। नसीराबाद के विद्वान पंडित कोमलचंद शास्त्री के नेतृत्व में चल रहे विधान के तहत सैकड़ो श्रद्धालुओं ने पूजा की अर्चना की।

18 लाख पौधे लगाकर नागौर को बनाएंगे हरा-भरा, सभी अधिकारी जुटे तैयारियों में

अभियान को सफल बनाने के लिए कलेक्टर ने ली समीक्षा बैठक

नागौर, (निसं)। जुलाई माह में वृहद स्तर पर पौधरोपण कराने के उद्देश्य से उसकी तैयारियों के संबंध में शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक में जिलाधिकारी पुरोहित ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार जुलाई माह में वृक्षारोपण महाअभियान के तहत जिले में 18 लाख पौधे लगाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इसके लिए सभी विभाग समय से पौधरोपण के लिए स्थान चिन्हित करके उसकी रिपोर्ट जिला परिषद सीईओ को भेज दें। समय से गड्ढे खोद लिए जाएं। सरकार द्वारा जो दिन निर्धारित किया जाएं, उससे एक सप्ताह पहले ही सभी तैयारियां पूरी कर ली जाएं। जिला कलेक्टर ने कहा कि सभी स्कूलों, गौशालाओं, तालाब किनारो व सरकारी कार्यालयों में अनिवार्य रूप से पौधरोपण किया जाएं। इसके लिए अधिक से अधिक जागरूकता लाकर कार्य को गति प्रदान करें। इस दौरान उन्होंने कहा कि केवल पौधरोपण करके ही इतिश्री नहीं करनी है, इसके बाद तीन वर्ष तक इसकी नियमित रूप से देखभाल भी करनी होगी। पौधों की सुरक्षा व उनके लिए पानी की व्यवस्था उचित रूप से करें, ताकि आप द्वारा लगाया गया प्रत्येक पौधा पेड़ बन सके। उन्होंने बताया कि पौधों के रोपण में फलदार, औषधीय गुणों से युक्त तथा छायादार पौधों को प्राथमिकता दी जाएं। इस दौरान उन्होंने कहा कि सभी विभागीय अधिकारी अपने अधीन आने वाले क्षेत्र में आगामी दो दिन में स्थान चिन्हिकरण कर वहां पौधरोपण के लिए गड्ढे खुदवाने की स्थिति, पौधों की आवश्यकता व उपलब्धता तथा पौधों की सुरक्षा व पानी की व्यवस्था संबंधी तैयारियां करते हुए संपूर्ण डाटा गूगल सीट पर लें। इस दौरान उन्होंने सभी अधिकारियों से अब तक लगाए गए पौधो की स्थिति भी जानी तथा जहां पौधरोपण किया गया है उनका क्रॉस वेरिफिकेशन करवाने के भी निर्देश दिए।

इस दौरान उप वन संरक्षक सुनील कुमार ने बताया कि वन विभाग द्वारा जिले में अलग अलग साइटो पर 6 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य हासिल किया जाएगा, इसके लिए सभी स्थानों पर गड्ढे खोदकर पहले से ही बीजारोपण किया जा चुका है, जहां पौधे विकसित हो चुके हैं।

कलेक्ट्रेट सभागार में जिला कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

कार्यालय ग्राम पंचायत नैणिया पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/10 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत नैणिया पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0074 — UBN-ZNR2425GLRC00120

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत नैणिया, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत नैणिया, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत हुलदानी पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/31 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत हुलदानी पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0073 — UBN-ZNR2425GLRC00119

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत हुलदानी, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत हुलदानी, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत गांगवा पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/12 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत गांगवा पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0080 — UBN-ZNR2425GLRC00126

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत गांगवा, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत गांगवा, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत चिताई पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/12 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत चिताई पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0081 — UBN-ZNR2425GLRC00127

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत चिताई, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत चिताई, पं.स. परबतसर (नागौर)

कार्यालय ग्राम पंचायत बडू पंचायत समिति परबतसर (डीडवाना-कुचामन)

क्रमांक-ग्रा.प./2024-25/32 — दिनांक 02.07.2024

ई निविदा सूचना - 01/2024-25

ग्राम पंचायत बडू पंचायत समिति परबतसर के लिये वित्तीय वर्ष की 2024-25 में मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति हेतु सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेव पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।

NIB-ZNR2425A0077 — UBN-ZNR2425GLRC00123

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत बडू, पं.स. परबतसर (नागौर) — सरपंच, ग्राम पंचायत बडू, पं.स. परबतसर (नागौर)

पंजाब नैशनल बैंक punjab national bank

विधि/वसूली विभाग, मंडल कार्यालय, उदयपुर, एलआईसी भवन तीसरा तल, सबसिटी सेन्टर, रेती स्टेण्ड के पास, उदयपुर
फोन नंबर: 0294-2688008/09/22/26, ई-मेल: cs8328@pnb.co.in

प्रतिभूतिहित (प्रवर्तन) नियम, 2002, परिशिष्ट IV [नियम 8(1) देखें]
कब्जा सूचना (अचल सम्पत्ति के लिए)

जबकि

अधोहस्ताक्षरकर्ता **श्री शैलेन्द्र कुमार वर्मा** ने **पंजाब नैशनल बैंक** के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूतिहित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13 सपठित, प्रतिभूतिहित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में ऋणियों **श्री सत्यनारायण बिड़ला पुत्र श्री रामपाल बिड़ला (मृतक के बाद से) [ऋणी एवं फर्म का प्रोपराईटर] एवं मैसर्स गणपतलाल सत्यनारायण बिड़ला जरिये प्रोपराईटर श्री सत्यनारायण बिड़ला (ऋणी) एवं श्री बसंती लाल बिड़ला पुत्र श्री सत्यनारायण बिड़ला (जमानतदार एवं ऋणी के कानूनी वारिस)** पर मांग सूचना **दिनांक 23.04.2024** पर उस सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के भीतर **दिनांक 31.03.2024 को बकाया राशि रू. 23,49,699.55 (रूपये तेइस लाख उनचास हजार छह सौ निन्यानवे एवं पैसे पचपन मात्र) प्लस दिनांक 01.04.2024 से ब्याज व अन्य खर्चे व लागतों** का पुनर्भुगतान करने के लिए मांग सूचना जारी की गई।

ऋणी द्वारा राशि का पुनर्भुगतान करने में असफल होने पर एतद्वारा सूचना ऋणी और आम जनता को दी जाती है कि निम्नहस्ताक्षरकर्ता ने **दिनांक 02, माह जुलाई, वर्ष 2024** को उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के अंतर्गत, उक्त अधिनियम की उपधारा 8 के साथ पठित उस पर प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में एतस्मिन नीचे वर्णित सम्पत्ति को कब्जे में ले लिया है।

कर्जदारों/जमानतदारों/बंधककर्ताओं का ध्यान, प्रतिभूत आस्तियों को छुडाने के लिए, उपलब्ध समय के संबंध में, अधिनियम की धारा 13(8) के प्रावधान की ओर आकृष्ट किया जाता है।

ऋणियों/जमानतदारों/बंधककर्ताओं को विशेष एवं आम जनता को एतद्वारा सम्पत्ति के साथ कोई संव्यवहार नहीं करने की चेतावनी दी जाती है और सम्पत्ति के साथ किया गया कोई भी संव्यवहार **दिनांक 31.03.2024 को बकाया राशि रू. 23,49,699.55 (रूपये तेइस लाख उनचास हजार छह सौ निन्यानवे एवं पैसे पचपन मात्र) प्लस दिनांक 01.04.2024 से ब्याज व अन्य खर्चे व लागतों** का पुनर्भुगतान करने के लिए **पंजाब नैशनल बैंक, गांधी नगर शाखा, भीलवाड़ा, राजस्थान** के प्रभार के अधीन होगा।

अचल सम्पत्ति का वर्णन

सम्पत्ति के सभी अभिन्न अंग गठित होते हैं जो कि श्री सत्यनारायण बिड़ला पुत्र श्री राम पाल बिड़ला के नाम आवासीय सम्पत्ति प्लॉट नं. 20, पट्टा नं. 20/12-04-2013, संकल्प नं. 14/05-04-2013 जो चंदन चौक के पास, नयी नगरी, गाँव एवं तहसील मांडल, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान 311001 पर स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 2414.84 वर्ग फीट है। सीमाएं– उत्तर: रोड, दक्षिण: बाल किशन भट्ट एवं समता देवी बिड़ला का मकान, पूर्व: देवीलाल बिड़ला का मकान, पश्चिम: रोडूमल बिड़ला का मकान

स्थान: भीलवाड़ा — हस्ता. (शैलेन्द्र कुमार वर्मा)
दिनांक: 02.07.2024 — प्राधिकृत अधिकारी एवं मुख्य प्रबंधक

रतनपुर बॉर्डर पर 70 लाख का सोना, 26 लाख की नगदी पकड़ी, तीन गिरफ्तार

तीनों आरोपी बैग लेकर पैदल जा रहे थे, संदिग्ध होने पर पुलिस ने रोककर तलाशी ली

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों से लाखों का सोना और कैश पकड़ा है। तीन थैलों में 70 लाख का सोना और 26 लाख रुपए का कैश मिला है। पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है।

- **पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है**

बिछीवाड़ा थानाधिकारी ने बताया कि अवैध कारोबार करने वालों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर नाकाबंदी कर गाड़ियों की तलाशी ली जा रही थी। उदयपुर से अहमदाबाद नेशनल हाईवे-48 पर रतनपुर बॉर्डर पर तीन व्यक्ति गाड़ी से उतरे। तीनों पैदल-पैदल जा रहे थे। उनके पास पीठ पर थैले लटके हुए थे। संदिग्ध होने पर तीनों को रोका और पूछताछ की। इस पर तीनों ही घबरा गए। पुलिस ने उनके थैलों की तलाशी ली। थैलों में पैकेट बनकर सोने के जेवरात और कैश भरा हुआ था। तीनों ही लोग जेवरात और कैश को लेकर कोई जवाब नहीं दे सके। इस पर पुलिस ने जेवरात और कैश पकड़ लिया।

पुलिस ने उनके पास से 962.05 ग्राम सोने के जेवरात और टुकडे बरामद किए हैं, जिसकी बाजार कीमत करीब 70 लाख रुपए बताई जा रही है। वहीं, 26 लाख 9 हजार 740 रुपए की नकदी पकड़ी है। पुलिस ने जेवरात और कैश ले जा रहे नरेंद्र कुमार जोगसन पुत्र गोंगाराम मेघवाल निवासी भेव, थाना पालडी जिला सिरोही, मुकेश कुमार पुत्र गणेशाराम मेघवाल निवासी उथमान थाना पालडी सिरोही और चंदूलाल पुत्र जैसाजी सेन निवासी कुम्हारों का वास गोल, थाना बारलूट सिरोही को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस तीनों से पूछताछ कर रही है।

रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों को लाखों का सोना और नकदी के साथ गिरफ्तार किया।

चौरासी विधानसभा सीट उपचुनाव में बीएपी का कांग्रेस से गठबंधन से इंकार

चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी

उदयपुर, (कासं)। बांसवाड़ा डूंगरपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया है। रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि राजकुमार रोत के सांसद बनने के बाद चौरासी विधानसभा सीट खाली हो गई है। राजकुमार रोत चौरासी विधानसभा सीट से विधायक थे। भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था। राजकुमार रोत इंडिया गठबंधन से चुनाव लड़ा और बांसवाड़ा लोकसभा सीट से सांसद निवार्चित हुए। इसके पहले वे चौरासी विधानसभा क्षेत्र से भारत आदिवासी पार्टी के विधायक थे, सांसद बनने के बाद उन्होंने से इस्तीफा दे दिया। चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी। भारत आदिवासी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने प्रभारी नियुक्त कर दिए हैं।

जानकारी के अनुसार डूंगरपुर जिले की चौरासी विधानसभा सीट पर पिछले दो चुनावों से भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) का कब्जा है, बीएपी के राजकुमार रोत यहां से लगातार दूसरी बार विधायक बने थे। पिछले चुनाव में राजकुमार रोत ने भाजपा के सुशील कटारा को 70 हजार मतों से हराया था। चौरासी विधानसभा सीट पर कांग्रेस की

- **सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया**
- **सांसद राजकुमार रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है**

जमानत जब्त हो गई थी। चौरासी विधानसभा क्षेत्र में बीएपी की स्थिति मजबूत मानी जा रही है। विधायक के उप चुनाव में बीएपी इस सीट पर कब्जा बनाए रखने के लिए पूरा प्रयास करेगी। वहीं सत्तारूढ पार्टी भाजपा भी इस बार बीएपी का गढ़ ढहाने का इरादा लेकर मजबूती से चुनावी मैदान में उतरने के मूड में है। पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी यहां तीसरे स्थान पर थी, कांग्रेस के उम्मीदवार ताराचंद भगोरा की जमानत जब्त हो गई थी।

चौरासी सीट पर उप चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों की बात करें तो भाजपा से पूनावाडा सरपंच मनोहरलाल डामोर, बडगामा सरपंच कांतिलाल अहारी, भचडयि सरपंच गट्टूसिंह डामोर, गंधवा सरपंच ईश्वर विहात, पूर्व प्रधान महेंद्र बरजोड में से कोई एक हो सकता है। जबकि कांग्रेस के संभावित उम्मीदवारों में कांग्रेस से पूर्व प्रधान निमिषा भगोरा, सीमलवाडा सरपंच रूपचंद भगोरा, भादर सरपंच विनोद कटारा, कारीलाल बुझ और महेंद्र भगोरा के नाम शामिल है। बीएपी में पोपट खोकरिया और अनिल चिखली के नाम चर्चा में है, लेकिन पार्टी में उम्मीदवार चयन को लेकर बनी हुई सलेक्शन प्रणाली में कोई ओर नाम भी आ सकता है। चुनावी समीकरण की बात करें तो लोकसभा चुनाव में बीएपी और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था, जिसकी वजह से कांग्रेस ने बीएपी के राजकुमार रोत को अपना समर्थन देते हुए उम्मीदवार नहीं उतारा था।

गठबंधन की बात आती है तो उम्मीदवार किस पार्टी का होगा यह आने वाले समय में ही तय होगा, लेकिन यहां गठबंधन के आसार कम ही है, क्योंकि लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत ने कांग्रेस से गठबंधन की बात को नकारते हुए कहा था कि कांग्रेस ने उन्हें समर्थन दिया था, गठबंधन नहीं हुआ था।

बीएपी अपनी परंपरागत और मजबूत सीट पर किसी भी पार्टी से समझौता नहीं करना चाहेगी, इसलिए चौरासी सीट पर उप चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार हैं। उपचुनाव में भाजपा भी सरकार होने का फायदा उठाते हुए चौरासी सीट पर पूरी ताकत लगाने के मूड में है।

ट्रक ने 66 भेड़ों सहित चरवाहे को कुचला

- **मृतक के परिजनों ने गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने व मुआवजे की मांग की**
- **जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर हुआ हादसा, सीसीटीवी से गाड़ी की तलाश कर रही है पुलिस**

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर कई दुर्घटनाएं होने के उपरांत भी प्रशासन कोई उपाय कर नहीं पा रहा है। बीती रात्रि को जैसलमेर जिले के देवीकोट कस्बे में सड़क हादसे में एक चरवाहे और 66 भेड़ों की मौत हो गई। हादसे की जानकारी मिलने पर देवीकोट पुलिस मौके पर पहुंची और चरवाहे का शव जवाहर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस अब सीसीटीवी आदि की मदद से हादसे में शामिल गाड़ी की तलाश कर रही है।

देवीकोट पुलिस चौकी के एएसआई दीपसिंह ने बताया कि कि बीती रात करीब एक बजे चरवाहे हनीफ खान (30) पुत्र सुमेर खान, मालकों की ढाणी, रामदेवरा निवासी को ट्रक ने टक्कर मारकर चरवाहे सहित 66 भेड़ों को मौत के घाट उतार दिया। जैसलमेर के राजकीय जवाहर हॉस्पिटल में मृतक के परिजन मॉर्च्यूरी के आगे इकट्ठा हो गये और गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने और मुआवजे की मांग की। ग्रामीण सफियत ने बताया कि प्रशासन की तरफ से कोई भी नुमाइंदा धरना स्थल पर नहीं आया है। इसको लेकर ग्रामीणों में काफी रोष है। जब तक ट्रक ड्राइवर नहीं पकड़ा जाएगा तब तक धरना नहीं उठाया जाएगा।

एएसआई दीपसिंह ने बताया कि देवीकोट कस्बे से लगते एनएच 68 पर छोड़ गांव के पास तीन चरवाहे अपनी भेड़ें लेकर आ रहे थे। 200 के लगभग भेड़ें सड़क पर चल रही थीं। इसी दौरान एक ट्रक तेज गति से आया और भेड़ों समेत चरवाहे हनीफ खान को कुचलता हुआ आगे निकल गया। साथ में चल रहे दो अन्य चरवाहों ने हादसे की जानकारी देवीकोट चौकी को दी। हनीफ भोपा गांव के किसी किसान की भेड़ों को चराने का काम करता था। बीती रात हनीफ दो अन्य चरवाहों देरावरसिंह व अमृतसिंह के साथ रामगढ़ से भोपा गांव जा रहा था। तीनों के पास लगभग 200 भेड़ें थी। हनीफ खान सबसे आगे चल रहा था। उसी दौरान जैसलमेर की तरफ से एक ट्रक तेज गति से आया और हनीफ खान और भेड़ों को रौंदते हुए चला गया। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि हादसे में लगभग 66 भेड़ों कि मौत हो गई जिनमें 30 भेड़ें हनीफ खान की भी शामिल है। इसके अलावा 10 भेड़ें घायल हो गई। पुलिस ने हनीफ खान के शव को जवाहिर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया और सीसीटीवी आदि के आधार पर ट्रक की खोज शुरू की। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि ट्रक बाड़मेर की तरफ गया है। हम ट्रक की तलाश कर रहे हैं।

छत से गिरकर युवक की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। लघुशंका के लिए रात में नींद से उठा युवक छत से नीचे गिर गया। हादसे में युवक की मौत हो गई। घटना, गंगापुर थाने के करणजी की खेड़ी गांव में हुई। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। गंगापुर थाना पुलिस ने बताया कि करणजी की खेड़ी निवासी अंबालाल (43) पुत्र चुन्नीलाल बैरवा बीती रात छत पर सो रहा था। शुक्रवार रात 11.50 बजे वह लघुशंका के लिए नींद से उठा। छत पर दीवार नहीं होने से वह असंतुलित होकर नीचे जा गिरा। गंभीर रूप से घायल अंबालाल को परिजन पहले गंगापुर और बाद में जिला अस्पताल ले गये, जहां डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को पोस्टमार्टम के बाद शनिवार को परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

आंधी-बारिश से फैक्ट्री की दीवार ढही, तीन की मौत

बीकानेर, (निसं)। मानसून की दूसरी ही बारिश ने बीकानेर में कहर बरपा दिया। बीछवाला थाना इलाके के शोभासर गांव में निर्माणाधीन फैक्ट्री की दीवार ढहने से मां-बेटी समेत तीन जनों की मौत हो गई। हादसे का पता चलने पर बीछवाल पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को मलबे से निकाल कर पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। हादसे का पता चलने पर जिला प्रशासन के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे।

बीछवाल एसएचओ नरेश निर्वाण ने बताया कि शोभासर के पास फैक्ट्री का निर्माण कार्य चल रहा है। तेज तूफान में फैक्ट्री की दीवार ढह गई। दीवार के मलबे में श्रमिक भोपाल निवासी टीना (26) पत्नी दीवान सिंह, उसकी ढाई वर्षीय बेटी मनीषा एवं क्रेन चालक औरंगाबाद निवासी संजय पुत्र रामयज्ञ दब गए। हादसे की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने वहां पहुंच कर अन्य श्रमिकों की मदद से तीनों को मलबे से निकाल कर 108 एम्बुलेंस से पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

एएसआई की ड्यूटी के दौरान मौत

जैसलमेर, (निसं)। सीमा सुरक्षा बल के एएसआई की अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के दौरान कठुआ गांव में मौत हो गई। शनिवार को 154 बटालियन बीएसएफ जैसलमेर के जवान एएसआई पुरुषोत्तमसिंह की कार नहर में गिरने से डूबने से मौत हो गई। एएसआई पुरुषोत्तम सिंह (56) बटालियन समेत अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के लिए जैसलमेर से गए थे। ड्यूटी के दौरान कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में गाड़ी से जाते समय गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया और गाड़ी नहर में गिर गई जिससे उनकी मौत हो गई। पुरुषोत्तमसिंह हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के रहने वाले थे। उनकी पोस्टिंग जैसलमेर में थी।

यूडी टैक्स बना 14.56 लाख, वसूला सिर्फ 27 हजार

बीकानेर, (निसं)। भले ही राज्य सरकार ने सभी निकायों को अपनी निजी आय में वृद्धि करने के निर्देश जारी किए हुए हों, लेकिन नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है। नगर निगम की वित्तीय वर्ष 2023-24 की ऑडिट में एक होटल को नगरीय विकास कर के रूप में 14.30 लाख रुपए का अनुचित लाभ दिए जाने की बात कही है। ऑडिट के मेमो नंबर 09 एक जुलाई 2024 में बताया गया है कि निगम की ओर से गंगानगर रोड स्थित एक होटल का वर्ष 2022 में हेरिटेज होटल के रूप में पंजीकरण होने के बावजूद अप्रेल 2016 से मार्च 2022 तक नगरीय विकास कर की गणना औद्योगिक डीएलसी दरों से की गई। इससे होटल को अनुचित लाभ पहुंचाया गया।

ऑडिट मेमो के अनुसार नगर निगम बीकानेर की ओर से 9 मार्च 2024 को आवेदक से बिना आवेदन पत्र, हेरिटेज होटल के रूप में राजस्थान, भारत सरकार

- **नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है**

की ओर से जारी पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त किए बिना एवं तत्कालीन आयुक्त के मौखिक आदेशों के आधार पर ही अवधि अप्रेल 2016 से मार्च 2024 की बकाया राशि 14 लाख 56 हजार 772 रुपए को औद्योगिक डीएलसी दरों से संशोधित गणना करते हुए केवल 27155 रुपए का बिल जारी किया गया। इससे निगम कोष को 14 लाख 29 हजार 617 रुपए की हानि हुई। लेखा परीक्षा के दौरान यह भी पाया गया कि इस होटल की ओर से अपने होटल के निर्माण क्षेत्र में विस्तार करने के लिए निगम में आवेदन किया गया था। इसके अनुसार भूमि का कुल क्षेत्रफल 12212.64 वर्ग मीटर था, जिसमें से पंजीकृत आर्किटेक्ट की रिपोर्ट के अनुसार कुल निर्मित क्षेत्रफल 2685.90 वर्ग मीटर अथवा 3169.36 वर्ग गज निर्मित क्षेत्र था, लेकिन निगम की ओर से होटल से 1665.44 वर्ग गज क्षेत्रफल के अनुसार ही नगरीय विकास कर की गणना की गई है, जिससे निगम को राजस्व हानि हुई है।

ऑडिट मेमो के अनुसार श्रीगंगानगर रोड स्थित इस होटल का हेरिटेज श्रेणी में पंजीकरण प्रमाण मार्च 2022 का है। जबकि निगम की ओर से होटल को इस श्रेणी का लाभ वर्ष 2016 से ही दे दिया गया। ऑडिट मेमो के अनुसार होटल की ओर से पर्यटन विभाग राजस्थान सरकार से हेरिटेज श्रेणी के अंतर्गत पंजीयन करवाया गया था। इसके लिए पर्यटन विभाग की ओर से होटल को प्रमाण पत्र 25 मार्च 2022 न्यू एप्लीकेशन के जरिये जारी किया गया था। उक्त पंजीकरण से पूर्व होटल एक पांच सितारा होटल था, जिसके लिए निगम की ओर से वाणिज्यिक डीएलसी दरों के अनुसार मांग पत्र नगर निगम की ओर से भी भेजा जा रहा था।

जहाजपुर प्रधान के निलंबन के विरोध में कोटड़ी बंद रहा

प्रधान सीता देवी के निलंबन के विरोध में कोटड़ी के बाजार बंद रहे।

भीलवाड़ा, (निसं)। राज्य सरकार ने जहाजपुर प्रधान सीता देवी गुर्जर को नियमित बैठकें आयोजित नहीं करने सहित अन्य मामलों को लेकर शुक्रवार को पद से निलंबित करने के मामले को लेकर शनिवार को कांग्रेस के आव्हान पर कोटड़ी कस्बे को बंद करवाया। वहीं श्रीचारभुजानाथ मन्दिर से उपखण्ड कार्यालय पहुंच कर ज्ञापन सौंपा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव धीरज गुर्जर की माता जहाजपुर पंचायत समिति की प्रधान सीता देवी गुर्जर को ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के अतिरिक्त आयुक्त एवं शासन उपसचिव ने आदेश जारी कर निलंबित कर दिया। इस आदेश को लेकर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर शरनिवार को सुबह से ही कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोग मुख्यालय स्थित चारभुजानाथ मन्दिर पर पहुंचना शुरू हुए, सामूहिक रणनीति तैयार कर मन्दिर से आदेश के विरोध में भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए सदर बाजार, पुराना

- **कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोगों ने विरोध यात्रा निकाली**

बस स्टैण्ड, नेहरू नगर होते हुए उपखण्ड कार्यालय पहुंच नारेबाजी कर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का पुतला जलाकर विरोध प्रदर्शन किया तथा राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान लोगों में आदेश को लेकर भारी विरोध नजर आ रहा था। वहीं कांग्रेस के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं नेइसे राजनैतिक द्वेशता के की गई कार्रवाई बताया। अमावस्या के बाद एकम पर बाजार बन्द होने से कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को बाजार बन्द कराने के लिए किसी प्रकार की मशक्कत नहीं करनी पड़ी। उधर, भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता जहाजपुर में प्रधान पद से निलंबित करने का विरोध प्रदर्शन जहाजपुर की बजाय कोटड़ी में करने को औचित्यहीन बताया।

सहोदरा नदी के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने बचाया

ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने रेस्क्यू किया।

टोंक, (निसं)। पीपलू उपखंड क्षेत्र के ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने पहुंचकर रेस्क्यू किया। तहसीलदार इंद्रजीत सिंह चौहान ने बताया कि ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था, जिसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंच एसडीआरएफ टीम को बुलाकर रेस्क्यू करवाया। तहसीलदार ने बताया कि ग्राम कुरेड़ी निवासी रामबाबू, शंकरलाल, रामा पत्नी दामोदर, हनुमान मीणा नदी के पास स्थित मकान पर शुक्रवार शाम से ही मकान की छत पर थे। जिनको शनिवार को एसडीआरएफ टीम ने सुरक्षित रेस्क्यू किया।

टोंक जिला कलेक्टर ने शनिवार को ग्राम बोरखंडी कला में तालाब टूटने से बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर जायजा लिया है। जिला कलेक्टर ने ग्रामीणों से रूबरू होते हुए उनकी समस्याओं को सुना। उपस्थित अधिकारियों को तुरंत ग्रामीणों को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए।

- **ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था**
- **विधायक व जिला कलेक्टर ने बारिश से उपजे हालातों का जायजा लिया**

इसी प्रकार पीपलू उपखंड क्षेत्र के संदेडा, संदेडा फार्म, हरिपुरा, भूरावली, पीपलू में बारिश से उपजे हालातों का क्षेत्रीय विधायक रामसहाय वर्मा ने पहुंचकर जायजा लिया। विधायक ने प्रशासनिक अधिकारियों को आमजन को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने हरिपुरा से सौंधीफल तक पक्की सड़क बनाए जाने की मांग की। इस पर विधायक ने कहा कि सड़क बनाए जाने को लेकर प्रस्ताव बजट में दिया हुआ है। जल्द ही इस मार्ग पर पक्की सड़क का निर्माण होगा, जिससे भविष्य में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी तरह भूरावली में पानी निकासी को लेकर ग्रामीणों की शिकायत पर पंचायत समिति विकास अधिकारी को निदान के निर्देश दिए।

बनास नदी पर बनाया ईसरदा कॉपर डेम ओवरफ्लो हुआ

शनिवार सुबह बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर कॉपर डेम ओवरफ्लो हो गया।

चौरु/उनियारा, (निसं)। बनेठा कस्बे के समीप बनास नदी पर ईसरदा मुख्य बांध निर्माण कार्य के लिए बनाया गया दस फट भराव क्षमता का कॉपर डेम शनिवार सुबह लगभग सात बजे बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर ओवरफ्लो हो गया। ईसरदा कॉपर डेम पर चादर शुरू हो गई। बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से चैनल गेटों में से पानी लबालब तरबतर होकर बांध निर्माण क्षेत्र में होकर बनास नदी में बहता हुआ नजर आया।

पिछले 24 घंटे से ईसरदा डेम डूब क्षेत्र केचमेंट एरिया में झमाझम बारिश से शुक्रवार शाम से ही बनास नदी में जल स्तर बढ़ गया था, जिसके बाद तीन चैनल गेट खोल कर पानी की निकासी की गई थी। शनिवार सुबह अचानक बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से डेम लबालब हो कर ओवरफ्लो हो गया। बनास नदी में व्यर्थ बहने वाले पानी को उपयोगी बनाने के लिए तथा जयपुर, सवाई माधोपुर व दौसा जिलों को पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए बनेठा ग्राम पंचायत से तीन किलोमीटर दूर बनास नदी पेटे पट राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2004 में ईसरदा बांध का निर्माण करवाने का निर्णय लिया गया था। वर्ष 2008 में लगभग 40 करोड़ रुपए की लागत से ईसरदा कॉपर डेम का निर्माण कराया गया था।

मुख्य बांध का निर्माण कार्य तीव्र गति से जारी था। इस दौरान बनास नदीं में पानी आ जाने से संवेदक को परेशानी का सामना करना पड़ा। आनन-फानन में शुक्रवार रातभर ईसरदा डेम परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी सभी मशीनों को बनास नदी के किनारे पर लाने के लिए मशक्कत करते नजर आए फिर भी कई सामान पानी में डूब गया। गौरतलब है कि बनास नदीं पर ईसरदा मुख्य बांध का निर्माण कराया जा रहा है, जिसमें 28 ब्लॉक तैयार किए गए हैं और मशीनों के द्वारा निर्माण कार्य जोरों पर चल रहा था।

शनिवार सुबह ईसरदा काफर डेम के ओवरफ्लो होने के बाद सभी मशीनों को नदी में से बाहर निकाल लिया गया है। अब लगभग निर्माण कार्य बारिश के मौसम में बंद ही रहने की संभावना जताई जा रही है। बारिश के बाद ही दुबारा से ईसरदा मुख्य बांध परियोजना का निर्माण कार्य शुरू होने की उम्मीद लगाई जा रही है।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता,
सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड कोटपूतली

क्रमांक-535 दिनांक-28.06.2024

ई-निविदा सूचना संख्या 03/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पथ निर्माण कार्यों हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं केन्द्रीय/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम	सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली के अन्तर्गत विभिन्न कार्यो की दर संविदा
निविदा की कुल लागत	रूपये 160.32 लाख
धरोहर राशि (2प्रतिशत)	रूपये 3,20,640/-
निविदा फार्म डाउनलोड एवं अपलोड करने की दिनांक	मंगलवार दिनांक 03.07.2024 प्रात 9.30 बजे से सोमवार 15.07.2024 सायं 06.00 बजे तक
निविदा खोलने की दिनांक	मंगलवार 16.07.2024 सायं 5.00 बजे।
निविदा खोलने वाले कार्यालय में ई-ग्रास चालान जमा कराने की दिनांक	मंगलवार 16.07.2024 सायं 2.00 बजे तक।
प्रोसेसिंग शुल्क, निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि जमा कराने की प्रक्रिया	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आनलाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क-8685-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क-0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि-8443-00-108-00-00 ऑफिस आई डी. 32827
यू.बी.एन. नंबर	1. PWD2425WSOB01912 2. PWD2425WSOB01913 3. PWD2425WSOB01914 4. PWD2425WSOB01915

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट "www.dipronline.org" व विभाग की वेबसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" एव "www.sppp.raj.nic.in" पर देखा जा सकता है।

(गौतम मीणा)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली

DIPR/C/5437/2024

‘अभ्यर्थियों की महत्वहीन त्रुटियों के निस्तारण के लिए क्या है व्यवस्था’

- **हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आर.पी.एस.सी. सचिव को शपथ पत्र पेश करने को कहा**
- **अदालत ने कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है**

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आरपीएससी सचिव को व्यक्तिशः या वीसी से पेश होकर शपथ पत्र के जरिए बताने को कहा है कि भर्ती में अभ्यर्थियों की ओर से की गई छोटी-मोटी और महत्वहीन त्रुटियों के प्रभावी निस्तारण के लिए क्या व्यवस्था की गई है। जिससे सरकारी नौकरी के योग्य अभ्यर्थियों को अनुचित मुकदमेबाजी से बचाया जा सके। वहीं अदालत ने दोनों अधिकारियों से याचिकाकर्ता के पद पर बने रहने के संबंध में हुए जानकारी पेश करने को कहा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश राजेश की याचिका पर दिए।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है। मामले में राज्य सरकार की ओर से अपनाए तकनीकी दृष्टिकोण की अदालत सराहना नहीं करता है, खासकर तब जबकि भर्ती का उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का चयन करना हो। इस तरह की कार्रवाई से पहले से मुकदमों के बोझ तले दबे न्यायालय में अनावश्यक मुकदमेबाजी की नौबत आती है।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का हिंदी वरिष्ठ अध्यापक भर्ती-2018 में चयन हुआ था। उसकी नियुक्ति को यह कहते हुए निरस्त कर दिया कि उसने आवेदन पत्र में अंग्रेजी में राकेश और हिंदी में राजेश नाम लिखा था। अदालत के दिसंबर, 2020 के अंतरिम आदेश की पालना में याचिकाकर्ता को 23 जून, 2021 को नियुक्ति दी गई। वहीं बाद में उसका आरपीएससी की ओर से आयोजित स्कूल व्याख्याता भर्ती में चयन हो गया। ऐसे में उसके नाम के विवाद को अंतिम रूप से तय किया जाए, ताकि उसे पे-प्रोटेक्शन का लाभ मिल सके। अदालत के सामने आया कि राज्य सरकार और आरपीएससी को याचिकाकर्ता के सही नाम पर संदेह नहीं है। इसके बावजूद भी याचिकाकर्ता की नियुक्ति को अंग्रेजी में गलत नाम होने के आधार पर विवादित किया जा रहा है।

अदालत के पूछने पर बताया गया कि विज्ञापन में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि हिंदी और अंग्रेजी में नाम को लेकर भिन्नता हो तो अंग्रेजी में लिखे नाम को प्राथमिकता दी जाएगी। इसके अलावा राज्य सरकार की ओर से अदालत को इस बात पर भी संतुष्ठ नहीं किया जा सका कि नाम की छोटी सी विसंगति को दूर करने के लिए याचिकाकर्ता को मौका क्यों नहीं दिया गया। अदालत ने कहा कि जब याचिकाकर्ता के नाम पर विवाद ही नहीं है तो उसकी नियुक्ति को लेकर विवाद क्यों किया जा रहा है।

माँग दिवस के रूप में मनाया सहकारिता दिवस

जयपुर, (का.सं.)। ऑल इंडिया कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व ऑल राजस्थान कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन के प्रान्तीय महासचिव सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने बताया कि 6 जुलाई अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस को फ़ेडरेशन के राष्ट्रीय आव्हान पर देश भर के सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग दिवस के रूप में मनाया। देश भर में सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग के लिए बेज धारण कर माँग दिवस मनाया। माँगो के लिए सचिव सहकारिता व रजिस्ट्रार सहकारिता को ज्ञापन प्रेषित किए गये। प्रदेश के सहकारी बैंक कर्मियों के वेतनमान सुधार के लिए मुख्यमंत्री, वित्त विभाग सरकार व सहकारी विभाग स्तर से अक्टूबर 2023 में ही सम्पन्न/स्वीकृत अवधिपार लंबित 16वे वेतन समझौते को सभी सहकारी बैंकों में एकरूपता लागू करना, सहकारी बैंकों में कर्मचारी व अधिकारी के तीन साल से रिक्त पड़े पदो पर भर्ती करना आदि को लेकर माँग दिवस मनाया गया।

हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के उर्स का समापन

मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन देशभर से हजारों मुरीदों ने अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी।

जयपुर। संसार चंद रोड स्थित मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन रात में क्लासिकल म्यूजिकल नाइट में फनकारों ने जबरदस्त अपने फन की प्रस्तुति दी। दूसरे दिन सुबह कुरानखानी हुई और दरगाह को गुसल दिया गया। शाम को कव्वाली की महफिल सजी जिसमें देश भर से कव्वाल पहुंचे बॉलीवुड फेम साबरी बंधुओं ने शानदार कलाम पेश किया, महफिल देर रात तक चली। इस मौके पर दरगाह के सज्जादा नशीन डॉक्टर सैयद हबीब उर रहमान नियाजी ने कहा कि तीन दिन के उर्स मुबारक में अलग-अलग दिन अलग-अलग कार्यक्रमों हुए। पहले दिन देश भर के मशहूर क्लासिकल फनकातो ने अपने फन पेश किया। दूसरे दिन शाम को मगरिब के बाद चादरों का सिलसिला शुरू हुआ। देशभर से अकीदतमंदो ने अपनी मुरादों की चादर पेश की। रात में कव्वाली की महफिल सजी जो देर रात तक चली। तीसरे दिन कुल की रस्म के साथुरा का समापन हुआ और देश में ओ अमन रहे, आपसी भाईचारा हमेशा बना रहे की अर्जी लगाई गई। उन्होंने कहा कि सभी मुरिदो से वादा लिया की एक पेड़ ज़रूर लगाएंगे। दरगाह के नायाब सज्जादानशीन सैयद फैज उर रहमान नियाजी ने कहा देशभर से हजारों की तादाद में मुरीद जयपुर पहुंचे हैं और अपने हकीकत के फूल पेश किए हैं और अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी सभी आए। तीनो दिन लंगर का प्रोग्राम रहा हजारों लोगों ने लंगर खाया। कुल की रस्म के साथ उर्स मुकम्मल हुआ।

रत्न आभूषणों के बूथ पर उमड़े देश विदेश के खरीदार

जयपुर, (का.सं.)। शो के दूसरे दिन उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा और विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 का अवलोकन किया ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष आलोक सोंखिया, महासचिव नीरज लुणावत ,उपाध्यक्ष राजू मंगोडी वाला और शो के कन्वीनर अशोक माहेश्वरी ने उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बेरवा और विधायक गोपाल शर्मा को शो का विजिट का स्वागत किया और शो का विजिट कराया।

जयपुर ज्वैलर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष और जस 2024 के सहसंयोजक राजू मंगोड़ी वाला ने बताया कि उन्होंने प्रदर्शनी का दौरा किया और जयपुर के एक्जीबिटर्स की ओर से प्रदर्शित किए गए रत्न आभूषणों के एक से बढ़कर एक डिजाइन और कारीगरों की कला की सराहना की। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने कहा की जयपुर की ज्वेलरी पूरी दुनिया में मशहूर है और इस तरह के शो यहां के ज्वैलरी व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय मंच पर और मजबूती के साथ प्रस्तुत करती है। बीजेपी सरकार इस शो का पूरा समर्थन और सहयोग करने के लिए हमेशा तैयार है। विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 में सजे रंगीन रत्नों के अनोखे संसार और खूबसूरत गहनों से बेहद प्रभावित नजर आए। उन्होंने कहा कि ज्वैलरी शो, ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर की ओर से किया गया शानदार प्रयास है।

सहकारी संस्थाएं नवीन तकनीक अपनाएं : अर्चना सिंह

रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित किया।

जयपुर, (कासं.)। रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने कहा कि प्रदेश में सहकारी संस्थाओं के पल्लवन के लिये आवश्यक है कि वे अधिकाधिक नवीन तकनीक को अपनायें ताकि उनकी कार्यशैली में पारदर्शिता का समावेश हो और सदस्यों का सहकारिता में विश्वास कायम रहे। उन्होंने कहा कि सहकारी संस्थाओं के विकास और प्रसार के लिये उनके संरक्षण, संवर्धन और नियंत्रण में संतुलन रखकर कार्य करने की आवश्यकता है।

सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित करते हुये कहा कि आज से लगभग 120 वर्ष पूर्व प्रदेश में कृषि क्षेत्र में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये सहकारिता का संस्थागत स्वरूप सामने आया था। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज और व्यक्ति की आवश्यकता और पसंद में परिवर्तन आया है। इसलिये अब सहकारी संस्थाओं को स्थानीय आवश्यकताओं और पसंद को ध्यान में रखते हुये अपने कार्यक्षेत्र में बदलाव लाने की जरूरत है।

रजिस्ट्रार ने कहा कि सहकारी संस्थाओं को अपनी सेवा प्रदायगी को बेहतर करते हुये नये नये क्षेत्रों में कार्य करना चाहिये, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सहकारिता में समर्पण और ईमानदारी के साथ कार्य करें और सभी को साथ लेकर चलेंगे तो किसी भी समस्या का समाधान स्थानीय स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं।

जयपुर डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पूनिया ने कहा कि सहकारिता लोकतंत्र का प्राणतत्व है। जिस लोकतंत्र में सहकारिता नहीं है वह मृतप्राय है। उन्होंने कहा कि स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता, पारस्परिक सहयोग की भावना समाज को एकजुट करती है और इसी से व्यक्ति में सहकारिता का जन्म होता है। समाज में नैतिकता होने पर ही सहकारिता का प्रसार संभव है।

अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के मौके पर राइसेम परिसर में रजिस्ट्रार सहकारिता, जयपुर डेयरी अध्यक्ष, निदेशक राइसेम सहित सभी सहकारजनों ने पौधारोपण किया। सेमीनार में करणपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अध्यक्ष लखविन्दर सिंह, फागी जीएसएस के अध्यक्ष ओ. पी. शर्मा, बीलवा जीएसएस के अध्यक्ष प्रहलाद सहाय, नाबार्ड के पूर्व महाप्रबंधक आर. एस. जोधा, भूतपूर्व संयुक्त रजिस्ट्रार (नियम) लीला पुरूषोत्तम तथा राइसेम निदेशक जितेन्द्र शर्मा ने संबोधन दिया। कार्यक्रम में संयुक्त सचिव सहकारिता दिनेश कुमार जांगिड, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (प्रथम) राजीव लोचन शर्मा, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (द्वितीय) शोभिता शर्मा, प्रबंध निदेशक एसएलडीबी विजय कुमार शर्मा सहित जयपुर सीसीबी के प्रबंध निदेशक तथा राइसेम एवं सहकारिता विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए हर्जाना

जयपुर, (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने फ्लैट की बुकिंग की राशि लेने के बाद भी तय अवधि में फ्लैट का कब्जा नहीं देने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। आयोग ने बिल्डर को निर्देश दिया है कि वह परिवादी को बुकिंग के तौर पर वसूल की गई 1.38 लाख रुपए की राशि 9 प्रतिशत ब्याज सहित लौटाए। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना व सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश लाखन सिंह के परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि उसने बिल्डर के प्रोजेक्ट सूर्या रेजीडेंसी में बुकिंग राशि देकर 2 बीएचके का फ्लैट बुक करवाया था। बिल्डर के प्रतिनिधि ने कहा कि यह प्रोजेक्ट 2019 तक पूरा हो जाएगा और वह उसे 20 दिन में ही बकाया राशि का लोन करवा देगा। इसके बावजूद भी प्रोजेक्ट समय पर पूरा नहीं हुआ। उसने जब विपक्षी के कर्मचारियों से अपनी जमा राशि वापस मांगी तो वे पहले तो टालमटोल करते रहे, लेकिन बाद में उसे डराया कि दुबारा संपर्क किया तो हाथ-पैर तोड देंगे।

दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त जीवाणु को एक बार फिर उम्रकैद

जयपुर, (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-3 महानगर द्वितीय ने नाबालिगों से दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त सिकंदर उर्फ जीवाणु को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख तीन हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। यह प्रकरण चार साल की बच्ची से दुष्कर्म कर जीभ काटने से जुडा है। अभियुक्त सात साल की नाबालिग से दुष्कर्म करने के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक महावीर सिंह किशनावत ने अदालत को बताया कि 23 जून, 2019 को पीडिता के चाचा ने शास्त्री नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसकी चार साल की भतीजी रात करीब दस बजे खेलती-खेलती घर से बाहर निकल गई थी। पुलिस और परिजनों के काफी तलाश करने के बाद भी उसका पता नहीं लगा। वहीं रात करीब दो बजे कोई उसे घर के थोडी दूरी पर छोडकर चला गया। अस्पताल जाने पर पता चला कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है और जीभ काटी गई है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को कोटा से गिरफ्तार किया। सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि अभियुक्त उसे मोटर साइकिल पर बैठाकर नाले में ले गया था और उसके साथ गलत काम किया। जब वह चिल्लाई को अभियुक्त ने चाकू से उसकी जीभ काट दी। जिस पर सुनवाई करते अदालत ने अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

25 फीट गहरे नाले में गिरा युवक

जयपुर। मानसरोवर इलाके में 25 फीट गहरे नाले में शुक्रवार रात एक युवक गिर गया। नाले में गिरने से उसके हाथ-पैर टूटने के साथ सिर में गहरी चोट लगी है। शिप्रापथ थाना पुलिस ने शनिवार सुबह पता चलने पर रेस्क्यू कर उसे नाले से बाहर निकाला। पुलिस ने घायल युवक को जयपुरिया हॉस्पिटल में एडमिट करवाया है। पुलिस ने बताया कि सुबह करीब 9 बजे रीको एरिया में स्टोन पार्क के पास नाले में एक युवक बचाने के लिए आवाज लगा रहा था। राहगीरों के आवाज सुनकर नाले में देखने पर लहूलुहान हालत में एक युवक पड़ा दिखाई दिया। शिप्रापथ थाने में लोगों ने 25 फीट गहरे नाले में युवक के गिरने की सूचना दी। सूचना पर बन्नालाल चेतक के साथ मौके पर पहुंचे। नाले से बाहर निकालने के लिए बन्ना लाल रेस्क्यू करने के लिए पेड़ के जरिए नाले में नीचे उतरे। उनके साथ किशना नाम का लड़का भी नाले में उतरा। चेतक पर मौजूद पुलिसकर्मियों से रस्सी मंगवाकर घायल युवक को बांधकर करीब 20 मिनट की मशक्कत कर बाहर निकाला गया। बन्ना लाल ने बताया कि नाले से बाहर निकालने गए युवक ने खुद का नाम केशव (25) पुत्र महेन्द्र निवासी मानसरोवर बताया। वह शुक्रवार रात नाले के ऊपर पानी की पाइप लाइन पर चल रहा था। पैर फिसलने से वह नाले में जा गिरा। सिर में चोट लगने के कारण बेहोश होने पर रातभर नाले में पड़ा रहा। होश आने पर सुबह हाथ-पैर के काम नहीं करने पर टूटने का पता चला। पुलिस ने 108 एम्बुलेस को बुलाकर घायल केशव को जयपुरिया हॉस्पिटल में एडमिट करवाया।

डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्र को समर्पित किया अपना जीवन : मंजू शर्मा

- **‘उनके नारे ''एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे'' को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया साकार’**

जयपुर। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 123वीं जयंती के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज उनके चित्र पर पुष्पांजली अर्पित की गई। इस दौरान जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी ने अपने जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया था। कश्मीर को लेकर डॉ मुखर्जी ने नारा दिया था कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे। इस नारे को 70 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने 70 मिनट में पूरा करते हुए कश्मीर से धारा 370 और 35 ए हटाने का ऐतिहासिक काम किया। वहीं दूसरी ओर कुछ राष्ट्र विरोधी लोग और राजनैतिक पार्टियां कश्मीर के मामले को यूएन में ले जाने का काम कर रहे थे, धारा 370 के बिल को संसद में फाड़ने का काम कर रहे थे, ऐसी राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कमजोर करने के लिए भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को एकजुट होकर डॉ मुखर्जी के पदचिन्हों पर कार्य करने की आवश्यकता हैं।

जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश में पंडित नेहरू की परमिट व्यवस्था का भी विरोध किया था। इसी विरोध के स्वरूप उन्होंने राष्ट्र के लिए अपना बलिदान दे दिया, लेकिन उनके बलिदान को जनसंघ के बाद भारतीय जनता पार्टी ने समझा और आज कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी नेता थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी और शिक्षाविद् डॉ मुखर्जी के जीवन चरित्र को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ मुखर्जी उस दौर में जो विचार लेकर चले थे, उनके विचारों को देश में समझने वाला कोई नहीं था। इसके बावजूद उन्होंने अपने विचारों को आगे बढाया। हमें डॉ. मुखर्जी की विचारधारा को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. मुखर्जी के सपने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरा करने का काम किया। कश्मीर में जिन हाथों में पत्थर हुआ करते थे, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन हाथों को रोजगार देकर उनके परिवारों को आगे बढ़ाने की दिशा में काम किया है। पुष्पांजली कार्यक्रम के दौरान भाजपा के संगठक प्रद्युम्न कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनुराधा माहेश्वरी और भाजपा मीडिया कार्यालय प्रभारी चंपालाल रामावत सहित अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पूर्व में की गई सेवा का वेतन संरक्षित करने के आदेश

जयपुर। हाईकोर्ट ने तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2018 में चयनित अभ्यर्थी का समान पद पर पूर्व में की गई सेवा व वेतन संरक्षित करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस अनुप कुमार ढंड ने यह आदेश बनवारी लाल चौधरी व अन्य की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2013 में चयन हुआ था। इस भर्ती में उसे बाडमेर जिला आवंटित हुआ था। वहां सेवा देने के बाद वर्ष 2018 में निकली तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में उसका चयन हो गया और उसे जयपुर जिला आवंटित हो गया। याचिका में कहा गया कि उसकी समान पद पर ही दूसरी नियुक्ति हुई है। ऐसे में राजस्थान सेवा नियम के नियम 24 के तहत उसके वर्तमान वेतन को संरक्षित किया जाए और पूर्व में की गई सेवाकाल की गणना भी की जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता की पूर्व की सेवाकाल की गणना करते हुए वेतन को संरक्षित करने के आदेश दिए हैं।

कोर्ट ने 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज किया

- **बीमा कंपनी को वाहन चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देने का मामला**

जयपुर, (का.सं.)। जिले की स्थाई लोक अदालत ने वाहन चोरी की सूचना बीमा कंपनी को 317 दिन की देरी से देने और चोरी की एफआईआर 20 दिन बाद दर्ज कराने को संदिग्ध मानकर 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज कर दिया। स्थाई लोक अदालत ने कहा कि वाहन चालक को ऐसा कौनसा जरूरी काम था, जो वाहन में ही चाबी लगाकर चला गया और दूसरे दिन मौके पर आया। वहीं वाहन के मालिक ने चोरी की एफआईआर भी बीस दिन बाद दर्ज क्यों नहीं कराई। वहीं बीमा कंपनी को चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देना भी बीमा शर्तो का उल्लंघन है। ऐसे में परिवादी बीमा क्लेम लेने का अधिकारी नहीं है। लोक अदालत ने यह आदेश किरण सिंह का परिवाद खारिज करते हुए दिए। बीमा कंपनी के अधिवक्ता ने बताया कि परिवादी ने अपने ट्रेलर का बीमा 12 लाख रुपए में बीमा कंपनी से करवाया था। इसकी अवधि 28 नवंबर 2020 से 27 नवंबर 2021 थी। इस दौरान बीमित वाहन 15 दिसंबर 2020 को ही कोटपुतली थाना क्षेत्र से चोरी हो गया, लेकिन वाहन चालक ने बीमा कंपनी को चोरी की सूचना नहीं दी और एफआईआर भी 20 दिन की देरी से दर्ज कराई। वहीं जांच में आया कि चालक खुद ही वाहन की चाबी उसमें लगाकर चला गया था और सुबह वापस आया तो वाहन उसे नहीं मिला। वाहन चालक ने बीमा कंपनी में क्लेम किया, लेकिन कंपनी ने उसे गलत मानते हुए 29 नवंबर 2021 को खारिज कर दिया। इसे परिवादी ने स्थाई लोक अदालत में चुनौती दी थी।

वर्षाकाल में हो रहे अमृत मिशन के काम जांचने पहुंचे आयुक्त

हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने शनिवार को अमृत योजना 2.0 के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया।

- **सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों को जल्द ढकने और बारिश के दौरान खुदाई कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए**

जयपुर । हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने शनिवार को अमृत योजना 2.0 के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान आयुक्त सुराणा ने अधिकारियों को सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों को जल्द ढकने के निर्देश दिए, साथ ही बारिश में खुदाई कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए।

आयुक्त ने बताया कि हेरिटेज निगम क्षेत्र में जयसिंह पुरा खोर, जामडोली सहित परकोटे में अमृत 2 योजना में सीवर का कार्य किया जा रहा है। बारिश में कोई हादसा नहीं हो जाएं, इसके लिए शनिवार को सभी क्षेत्र में खुदाई पर रोक लगाई गई है। इसके अलावा किन क्षेत्र में कार्य हो रहा है, वहां भी बेरीकेट लगाने और खड्डे को जल्द भरने के निर्देश दिए। इस दौरान आयुक्त ने खोर में बने एसटीपी प्लांट का भी निरीक्षण किया। इनके अलावा वर्षा में धंसी हुई सड़कों को जल्द मरम्मत करने के निर्देश दिए।

वहीं, अतिरिक्त आयुक्त डॉ. रौनक बैरागी ने शहर के प्रमुख पार्क का निरीक्षण किया और हेरिटेज निगम की ओर से किए जा रहे पौधा वितरण की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पार्क की सफाई, रखरखाव और हरित क्षेत्र को बढ़ावा देने के निर्देश दिए। अतिरिक्त आयुक्त ने पार्क की स्वच्छता व्यवस्था का जायजा लिया और अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे नियमित रूप से सफाई अभियान चलाएं और पार्क की हरियाली को बनाए रखें। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है बल्कि समाज में जागरूकता भी बढ़ती है। इस दौरान जिन लोगों को पौधों का वितरण किया गया और सभी उपस्थित लोगों से अपील की गई कि वे इन पौधों की अच्छी देखभाल करें और अपने आसपास के क्षेत्रों को हरा-भरा बनाएं।

एल.आई.सी. का मिशन ‘जीवन समर्थ’ शुरू

जयपुर (कासं)। भारतीय जीवन बीमा निगम (एल.आई.सी.) ने महात्वाकांक्षी मिशन ‘जीवन समर्थ’ शुरू किया है, जिसका उद्देश्य ग्राहकों की तेजी से विकसित हो रही जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने पूरो 14 लाख एजेंट कार्यबल को भविष्य के लिए तैयार करना है।

इसे हासिल करने के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध रणनीति परामर्श फर्म मैसर्स ए.टी.कियर्नी के साथ एल.आई.सी. ने साझेदारी की है, जो कि एल.आई.सी. के मौजूदा एजेंसी ढांचे को की एंड-टू-एंड आधार पर समीक्षा करके इस एजेंसी परिवर्तन योजना को शुरू करेगी। इसके शाखाएं डिविजन और जोनल स्तर पर एजेंसी संचालन को नया रूप देना भी शामिल होगा, जिसका उद्देश्य भारत में बीमा क्षेत्र के तेजी से बदलते उद्योग और नियामक परिदृश्य के मद्देनजर वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को स्थापित करना है।

मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर किसानों का मान बढ़ाया : डॉ. सतीश पूनिया

हरियाणा भाजपा का प्रभारी बनाए जाने पर डॉ. सतीश पूनिया को कार्यकर्ताओं ने बधाई दी।

जयपुर। भाजपा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा डॉ. सतीश पूनिया को हरियाणा भाजपा प्रदेश प्रभारी बनाये जाने पर प्रदेशभर से जयपुर पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन ने डॉ. सतीश पूनियां को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित समस्त केंद्रीय नेतृत्व का हार्दिक आभार-अभिनंदन व्यक्त किया।

इस दौरान सतीश पूनिया ने जयपुर में राणी सती नगर स्थित अपने जनसंवाद केंद्र पर जनसुनवाई की, जो वह जयपुर रहने के दौरान पिछले कई वर्षों से सुबह 8 से 11 बजे तक प्रदेशभर से पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन से मुलाकात कर जनसुनवाई करते हैं।

सतीश पूनिया ने कहा कि हरियाणा राज्य के प्रभारी के रूप में जिम्मेदारी प्रदान करने हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन व्यक्त करता हूं कि राजस्थान प्रदेश के सामान्य किसान परिवार में जन्मे मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर राजस्थान, हरियाणा सहित समस्त देश के किसानों का मान बढ़ाया है, इससे पहले राजस्थान जैसे बड़े प्रदेश का अध्यक्ष बनाकर भी भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने किसानों का सम्मान बढाया था। उन्होंने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में किसानों एवं खिलाड़ियों की धरती हरियाणा में जनता के आशीर्वाद एवं कार्यकर्ताओं के परिश्रम से फिर से प्रचंड बहुमत की भाजपा सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि, हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार हरियाणा प्रदेश के विकास के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है, वहीं नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार और हरियाणा की नायब सैनी सरकार की जनहितकारी नीतियों पर हरियाणा की सभी 36 कौम की किसान सरदारी, युवा एवं माता बहनें अपने आशीर्वाद से विश्वास की मुहर लगाएंगे और तीसरी बार भाजपा हरियाणा में जीत की हैट्रिक लगाकर प्रचंड बहुमत की सरकार बनाएगी।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित रहा : सांसद भागीरथ चौधरी

मतदाता अभिनंदन समारोह हुआ सम्पन्न

ब्यावर, (निसं)। भारतीय जनता पार्टी ब्यावर विधानसभा क्षेत्र द्वारा केशव नैन में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 123वीं जन्म जयंती के अवसर पर उन्हें स्मरण करते हुए डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन चरित्र एवं विशाल मतदाता अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया। समारोह डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित करके विधिवत शुरू हुआ। इसके पश्चात अतिथियों के स्वागत के दौरान केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी को 51 किलो फूलों की माला से एवं जिला अध्यक्ष देवी शंकर भूतड़ा का विधानसभा क्षेत्र के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से हनुमान गदा भेंट करके स्वागत सत्कार किया। सभी अतिथियों का भाजपा दुपट्टा एवं सपा पहनकर अभिनंदन किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि जनसंघ संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित रहा उन्होंने भारत की एकता अखंडता के लिए सत्ता को ठोकर मार कर अपना सर्वोच्च बलिदान दिया उन्होंने कश्मीर को बचाने के लिए एक देश में दो निशान दो प्रधान दो विधान के खिलाफ जाकर आंदोलन किया और पश्चिम बंगाल को भारत का हिस्सा बनाए रखने में वैचारिक लड़ाई में अपनी भूमिका निभाई।

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि कल भी देश तोड़ रही थी आज भी कांग्रेस वोट बैंक के राजनीति के लिए देश को तोड़ रही है और बहु संख्यक समाज हिंदुओं को कभी भगवा आतंकवादी, कभी संप्रदायिक, तो कभी हिंदू आतंकवादी कह कर अपमान किया और आज हिंदू समाज को हिंसक कह कर अपमान कर रही है। अजमेर देहात जिलाध्यक्ष देवीशंकर भूतड़ा ने कहा कि धारा 370 और 35 ए आर्टिकल भारत को कश्मीर से अलग करने का अभिशाप रहा जिसके लिए डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने आप को बलिदान कर दिया और कहा कि भारतीय जनता पार्टी डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को भूलने वाली नहीं है। उन्हीं के आदर्श पर चलकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर से धारा 370, 35 आर्टिकल को हटाकर उनके सपनों को साकार किया।

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बताए मार्ग पर चलकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश की जनता की सेवा कर रहे है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का इतिहास देश तोड़ने वाला रहा है और यही कारण है कांग्रेस लगातार देश को तोड़ने वाला, कश्मीर को भारत से अलग करने वाला धारा 370 कानून फिर से लागू करना चाहती है और उसके लिए वह पूरे प्रयास कर रही है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन चरित्र एवं विशाल मतदाता अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया।

नई पाइप लाइन का किया शिलान्यास

अजमेर, (कासं)। अजमेर दक्षिण विधायक अनिता भदेल ने शनिवार को ब्यावर रोड़ स्थित चन्द्रनगर, वार्ड 31 में करीब 14 लाख रुपए की लागत से डलने वाली पाईप लाईन का शिलान्यास किया। पाइप लाइन लोहे के 100 एमएम के पाइप से 700 मीटर तक डाली जाएगी। भदेल ने बताया कि इस पाईन लाईन से कॉलोनी की लगभग 10 गलियां लाभांवित होगी। पूर्व में यहां पर कम एमएम की सीमेंट की पाईप लाईन थी, जो अक्सर टूट जाती थी, जिस कारण क्षेत्रवासी बार-बार गंदा पानी के आने व कम प्रेशर से आने की शिकायत भी करते थे। लोगों को गर्मियों के मौसम में पानी के टैंकर मंगाकर काम चलाना पड़ता है। नई पाईप लाईन डालने से पानी का प्रेशर भी बढ़ेगा और पाईप लाइन के बार-बार टूटने की समस्या से निजात भी मिलेगी। भदेल ने कहा कि विधान सभा क्षेत्र की सभी गलियों में धीरे-धीरे करके नई पाईप लाईन डाली जायेगी। जहां पर ओवरहैड टेंक बनवाने की आवश्यकता होगी वहां पर ओवरहैड टेंक बनाए जायेगे।

■ लोहे के 100 एमएम की 700 मीटर लंम्बी पाईप लाईन से क्षेत्रवासी होंगे लाभांवित

सार-समाचार

मुखर्जी की जयंती पर कार्यक्रम

ब्यावर, (निसं)। सेन्दडा रोड स्थित विधायक कार्यालय सभागार मे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 124वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर भाजपा पार्षदो तथा कार्यकर्ताओं ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।विधायक शंकर सिंह रावत ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश की एकता व अखंडता के लिए कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा लगाया पौधा आज विश्व की सबसे बड़े राजनीतिक दल के रूप में स्थापित हो गया है। उन्होंने हमेशा देश की एकता व अखंडता के लिए कार्य किया और देश की आजादी के बाद कश्मीर समस्या को लेकर मुखर होकर आंदोलन किया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी सबसे कम उम्र में अपनी कुशाग्रा बुद्धि के बल पर कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। देश की आजादी के बाद पहली संसद में सदस्य चुने गए और केंद्रीय मंत्री बने लेकिन अपने सिद्धांतों से नहीं डिगे और मंत्री परिषद से इस्तीफा दे दिया, उन्होंने जनसंघ का गठन किया और पहले अध्यक्ष बने।विधायक ने कहा कि डॉ. मुखर्जी के बताए मार्ग पर चलें। इस मौके नगर परिषद सभापति नरेश कनोजिया ने कहा कि डॉ. मुखर्जी ने कभी सिद्धांतों से समझौता नहीं किया वो स्वयं धारा 370 के खिलाफ थे। उन्होंने एक देश एक निशान व एक संविधान के तहत कश्मीर में आंदोलन किया। कार्यक्रम मे उप सभापति रिखब चन्द खटोड़,वरिष्ठ भाजपा नेता टीकम सिंह चौहान, पूर्व महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष इन्दू शर्मा, मुख्य सचेतक मंगत सिंह मोनू, सचेतक हंसराज शर्मा, पार्षद नीरू मेहन्द्र चौहान, हेमन्त कुमावत, पिंकी कुमावत, ललिता मोहन सिंगारिया, बीना झंवर, संजय करेल, दीपक शर्मा, अजय फुलवारी, गोतम मेवाड़ा, राहुल राजपुत, भागचन्द जेसवानी आदि उपस्थित थे कार्यक्रम में मंच संचालन पुर्व पार्षद ईश्वर तंवर ने किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला

ब्यावर, (निसं)। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मसुदा द्वारा 03 दिवसीय जिला संदर्भ समूह प्रशिक्षण कार्यशाला स्थानीय पीएमश्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय छावनी रोड में सम्पन्न हुई।प्रधानाचार्य डॉ. सीमा कृपलानी ने बताया कि कार्यशाला में शोध से संबंधित विभिन्न बारिकियों पर संदर्भ व्यक्ति डॉ. विनोद टेकचन्दानी द्वारा वार्ताएं दी गई। कार्यशाला के समापन समारोह में डाईट प्राचार्य भगवान दिवाकर ने कहा कि शोध राष्ट्र, समाज एवं शिक्षार्थी का हित साधक होना चाहिए एवं शोध सार्वभौमिक, सतत, समावेशी एवं संस्कारयुक्ता के लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए करना चाहिए। डाईट उपाचार्य गोरधन लाल मीणा ने सभी शोधार्थीयों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी शोधार्थियों से प्रासंगिक शोध करने हेतु प्रेरित किया। इस से पूर्व प्रथम दिवस उदघाटन सत्र में प्रो0 अर्जुन कृपलानी एवं डॉ. दीपाली लाल द्वारा प्रेरणास्पद उदबोधन दिया। समापन समारोह में शोध समूह के नवीन पी.एच.डी. धारक डॉ. आरती अमरावत, डॉ. पूनम डागा को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात शोध सार पत्रिकाओं का विमोचन किया गया। इस अवसर पर अर्चना पाटनी, सुनिता चौधरी, रमेश गुरू, कमल कांत किंगर, डॉ. रमेश देवानी, देवकी नन्दन, शंकर लाल सैनी, शिल्पा सैनी, प्रवीण चौधरी, रामदेव चांगल, प्रमीला कच्छावा, लीना सैनी सहित 43 सम्भागियो में भाग लिया कार्यक्रम का संचालन सुनिता चौधरी एवं गोपाल शर्मा ने किया।

155 बच्चों को किया लाभान्वित

शाहपुरा, (निसं)। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा जिला कलेक्ट्रेट में जिला कलेक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा नवाचार कार्यक्रम के तहत बाल सहारा का क्रियान्वयन किया गया। ये नवाचार के तहत पालनहार योजना से वंचित पात्र बच्चों को जोड़े जाने का नवाचार कार्यक्रम रखा गया है। ईसमे आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत वार सर्वे करवाया गया। प्राप्त सर्वे लिस्टों का सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग शाहपुरा द्वारा जाँच कर पात्र व्यक्तियों के आवेदन करवाये गये। उक्त नवाचार के तहत अभी तक कुल 96 पालनहारों के 155 बच्चों को लाभान्वित किया गया। जिला कलक्टर द्वारा पालनहार तथा इनके बच्चों के साथ संवाद कर प्रोत्साहित किया गया। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी राम अवतार जाट ने बताया कि पालनहार योजना में 10 विभिन्न श्रेणियों में यथा अनाथ, निराश्रित पेंशन की पात्र विधवा, पुनर्विवाहित विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता, नाता जाने वाली माता के बच्चें, तथा विशेषयोग्यजन, सिलोकोसिस, कुष्ठ रोग, एच.आई.वी. या एड्स से पीड़ित, न्यायिक प्रक्रिया से मृत्यु दण्ड या आजीवन कारावास प्राप्त माता पिता के बच्चे प्रति माह श्रेणी अनुसार 1000 से 2500 रुपये प्रतिमाह की राशि प्रति बच्चे को प्रदान की जाती है।

नई कार्यकारिणी की हुई घोषणा

शाहपुरा, (निसं)। श्री गणेश उत्सव समिति द्वारा गणेश महोत्सव को लेकर प्रथम बैठक आयोजित की गई। बैठक में आने वाली 7 सितंबर 2024 को गणेश चतुर्थी की तैयारी को लेकर चर्चा की गई। गणेश उत्सव समिति के कोषाध्यक्ष निखिल जीनगर ने बताया कि शाहपुरा में बड़े पैमाने में सिर्फ एक जगह मूर्ति स्थापना की जाती है सभी शाहपुरावासियों का आना-जाना रहता है। समिति ने निर्णय लिया है कि इस बार गणेश महोत्सव को बड़े धूमधाम से मनाया जाएगा। छोटे बच्चों एवम महिलाओं के लिए डांडिया का कार्यक्रम रहेगा। समिति के सदस्यों का ड्रेस कोड लागू किया गया। समिति के सदस्य विश्व बंधु पाठक, जगदीश जोशी, दिलीप जीनगर, जय सैनी, निखिल जीनगर, निक्कू जीनगर, हर्ष चंदेल, ऋषभ सोनी, कृष्णा सोनी, पीयूष अग्रवाल, सक्षम पोरवाल, आदित्य पोरवाल, सुमित सोनी, तुषार जीनगर ,तनिष जीनगर सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस दौरान समिति की नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। जिसमे अध्यक्ष - विश्व बंधुपाठक ,उपाध्यक्ष -दिनेश चंदेल, अर्पित कसेरा, कोषाध्यक्ष - निखिल जीनगर, सचिव -जगदीश जोशी, उप सचिव - दिलीप जीनगर, संगठन मंत्री- ऋषभ सोनी, मीडिया प्रभारी जय सैनी को बनाया गया।

प्रांतीय प्रतिभा सम्मान समारोह एवं प्रदेश कार्यकारिणी अधिवेशन आज

आसीन्द, (निसं)। गुलाबपुरा कस्बे के सुमित्रा पैलेस में राजस्थान प्रांतीय तैलिक साहू महासभा के द्वारा प्रांतीय प्रतिभा सम्मान समारोह एवं प्रदेश कार्यकारिणी के अधिवेशन आयोजित किया जाएगा। वही प्रदेश अध्यक्ष देवीलाल साहू ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम के दौरान प्रथम सत्र में प्रात: 9 बजे पंजीकरण एवं अल्पाहार का आयोजन किया जाएगा 10 बजे दीप प्राजुला ने और राष्ट्गान 10:15 बजे तिथि परिचय 11 बजे प्रतिभा सम्मान समारोह वहीं द्वितीय सत्र में भोजन के उपरांत दोपहर 2:30 पर प्रदेश कार्यकारिणी का अधिवेशन प्रारंभ होगा वही कार्यक्रम के दौरान हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजस्थान प्रांतीय तैलिक साहू महासभा द्वारा साहू तेली राठौर गी मोदी समाज के मेधावी छात्र छात्राएं जिन्होंने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं सीबीएसई बोर्ड की कक्षा 10 एवं 12वीं में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं उन छात्र-छात्राओं तथा वर्ष 2023 24 में प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित कर विभिन्न विभागों में नियुक्ति प्राप्त कर साहू समाज का नाम गोरवान्वित करने वाले समाज की प्रतिभाओं को राजस्थान प्रांतीय तैलिक साहू महासभा द्वारा सम्मानित इस कार्यक्रम में किया जाएगा इसके साथ ही राजस्थान प्रांतीय तैलिक साहू महासभा का वार्षिक अधिवेशन व प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक भी रविवार 7 जुलाई को सुमित्रा पैलेस हरदा रोड गुलाबपुरा में रखी गई है प्रतिभाओं का सम्मान समारोह प्रात: 10:15 पर रखा गया है कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान प्रांतीय तैलिक साहू महासभा देवीलाल साहू, कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष जयंतीलाल राठौर, देवेंद्र साहू, राजेंद्र मोदी, प्रदेश महामंत्री आत्माराम लाईवाल, प्रदेश महामंत्री मेघराज साहू, वरिष्ठ उपाध्यक्ष ओमप्रकाश साहू, नवरत्न मल साहू, कैलाश ईंदौर, चांदमल बैंडवाल, प्रदेश मीडिया प्रभारी प्रहलाद दिया व महिला कार्यकारी अध्यक्ष राजेश्री राठौड़ सहित साहू समाज के विभिन्न पदाधिकारी गण एवं गणमान्य नागरिक कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे।

■ प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक आज सुमित्रा पैलेस हरदा रोड गुलाबपुरा में रखी गई है

पौधारोपण किया

शाहपुरा, (निसं)। श्री शिव शक्ति गौशाला अखाड़ा तहनाल में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आव्हान पर आमजन ने माँ के नाम पौधारोपण किया।

गौ शाला अध्यक्ष गोवर्धन सिंह राणावत ने बताया के इस वर्ष गौ शाला परिसर में 370पौधा लगाने का लक्ष्य रखा है। गौ शाला सचिव जीवराज गुर्जर ने कहा की गौ शाला समिति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से गौ शाला परिसर में आमजन ने अपनी माँ के नाम से पौधा लगाया है करीब आज 70 व्यक्तियों ने पौधारोपण किया है इस दौरान गौशाला समिति कोषाध्यक्ष भवर लाल कुमावत ने बताया की भामाशाह ने ट्री गार्ड सहित पौधारोपण में अपना-अपना सहयोग किया जिसमें भाजपा जिला उपाध्यक्ष अविनाश जीनगर, जिला परिषद सदस्य शिवराज कुमावत, पंचायत समिति सदस्य सावर लाल गुर्जर, युवा मोर्चा नगर संयोजक चेतन वैष्णव सहित गौ शाला समिति के सदस्यों ने पौधारोपण किया।

सिंधी समाज के 130 मेघावी विद्यार्थियों को किया सम्मानित

अजमेर, (कासं)। नवाब का बेड़ा स्थित होटल कावा इन में शनिवार को राष्ट्रीय जन सेवा समिति परिवार व ड्रीम होली डे के संयुक्त तत्वावधान में कक्षा दसवीं व बारहवीं में 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

समिति के अध्यक्ष मनोज झामनानी ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत श्री निर्मल धाम के सन्त स्वामी आत्मदास उदासीन, कार्यक्रम के आयोजक गिरीश आसनानी व समिति के संस्थापक नानक गजवानी द्वारा इष्टदेव साई झुलेलाल की प्रतिमा पर जोत जगाकर किया गया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए गिरीश आसनानी ने बताया कि सिंधी समाज के 130 छात्र व छात्राओं को मोमेंटो, सर्टिफिकेट व पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। कक्षा दसवीं व बाहरवीं में प्रथम दस स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विशेष सम्मान व्यक्त किया गया। आयोजक आसनानी ने बताया कि संस्था की ओर से विद्यार्थियों के सम्मान और उनका मनोबल बढ़ाने के लिए यह समारोह आयोजित किया गया है। ताकि विद्यार्थी शिक्षा के साथ विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़कर, परिवार, समाज व देश का नाम रोशन कर सके। संस्था के संस्थापक नानक गजवानी ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरि चंदनानी, रमेश टिलवानी, तनूजा आसनानी, जया आसवानी व हरीश गजवानी, रहे।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में भगवान सबलानी, शंकर सभनानी, रमेश लखानी, चन्दर लखानी, किशोर विधानी, अशोक पमनानी, भारती मेहरचंदानी, मीना भाटिया, कारू भाई व समस्त अधिकारियों का सहयोग रहा।

'अपने ध्येय वाक्य जगमग रहे अजमेर हमारा को चरितार्थ किया है'

अजमेर, (कासं)। अजमेर शहर की बिजली व्यवस्था संभाल रही टीपीएडीएल अजमेर ने 1 जुलाई को विद्युत आपूर्ति व्यवस्था प्रदान करने में 7 साल पूरे हुए। शनिवार को टाटा पावर के सीईओ सुनील कुमार शर्मा ने प्रेसवार्ता आयोजित कर टाटा पावर की उपलब्धियों की जानकारी दी।

टाटा पावर के सीईओ सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि टीपीएडीएल अजमेर प्रबंधन ने अपने ध्येय वाक्य जगमग रहे अजमेर हमारा को चरितार्थ करते हुए शहर में विद्युत आपूर्ति सेवाएं पूरी प्रतिबद्धता और तत्परता के साथ की है। साथ ही अजमेर के उपभोक्ताओं के साथ भावनात्मक संबंध बनाने में भी कामयाब हुए हैं। अजमेर शहर के बढ़ते हुए बिद्युतीय लोड को देखते हुए जरूरत के अनुसार लोड कैपेसिटी को बढ़ाते हुए लगभग 606 नए ट्रांसफार्मर लगाए हैं तथा 4 नए जीएसएस पालरा, विजयराज सिंधिया, अजमेर डेयरी और गोल्ड सुक बनाए हैं जिनसे अजमेर शहर के घरेलू और व्यावसायिक उपभोक्ताओं को बिजली आपूर्ति प्रदान की जाती है। सीईओ शर्मा ने बताया कि अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा संचालित सभी 7 सब डिवीजन पूरी क्षमता, प्रतिबद्धता और पर्याप्त मैनपॉवर और मैटेरियल के साथ संभाल रहा है। प्रबंधन ने कॉल सेंटर को आधुनिकतम तकनीक के माध्यम से जोड़ा है।

टाटा पावर के जनसंपर्क अधिकारी लक्ष्मीकांत शर्मा ने बताया कि बहुत जल्द जनसंपर्क अभियान के माध्यम से अजमेर शहर के आम उपभोक्ताओं से डोर टू डोर सीधा संवाद का कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा, जिससे उपभोक्ताओं की शिकायतों का निवरण किया जाएगा। शनिवार को प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने के प्रति जागरुक करने के लिए जूट के थैलों का वितरण भी किया।

टेऊंराम चालीसा महोत्सव मनाया

ब्यावर, (निसं)। विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमो के साथ मनाया चालीसा महोत्सव मनाया जा रहा है। प्रेम प्रकाश आश्रम के प्रचार प्रमुख नरेंद्र जेसवानी ने बताया की प्रति दिन चालीसा वंदन किया जा रहा है एवं शाम को दरबार मे सत्संग एव प्रवचन हो रहे है। शनिवार को चांग गेट पर टेऊ राम अम्र क्षेत्र लगा कर राहगीरों को भोजन प्रसाद का वितरण किया गयाएव शीतल पेय पिलाया गया। आश्रम के संत शम्भू लाल ने सद्गुरु टेऊं राम महाराज की पूजा अर्चना की एव माला पहना कर अन्न क्षेत्र का शुभारंभ किया। इस अवसर पर दिलीप कुमार,सुन्दर वासवानी, महेश पारवानी, सतीश मोरवानी, कपिल लालवानी, नरेश थावानी, नरेश मांधानि, राजू हरजवानी, गोपाल तिलोकानी, आशु लालवानी,संत्री बाबानी, पवन राजवानी, आदि ने अपनी सेवाएं दी। आश्रम के प्रचार प्रमुख नरेंद्र जेसवानी ने बताया की प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के प्राकट्य के 138 वे जन्मोत्सव के उपलक्ष्में 5 दिवसीय विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए है।

बिजली विभाग ने रीको एरिया में जीएसएस स्वीकृत किया

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। लघु उद्योग भारती द्वारा उद्योग हितार्थ निरंतर मांग किये जाने पर रीको द्वारा अजमेर विद्युत वितरण निगम लि को जमीन उपलब्ध कराने के पश्चात बिजली विभाग ने चतुर्थ चरण रीको में नया 33/11 केवी जीएसएस लगाने की स्वीकृति जारी की है।

अध्यक्ष उमेश गोयल ने बताया की काफी संख्या मेंइंडस्ट्री कटर लगने के कारण विद्युत भार बढ़ गया। पूर्व में स्थापित सभी जीएसएस व फीडर ओवरलोडिंग की स्थिति में पहुंच गये, जिसके चलते मार्बल उधमियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। चतुर्थ चरण में स्थापित 267.7 एकड़ क्षेत्रफल के लगभग 550 संख्या के औद्योगिक भूखंड का औद्योगिक भार अनुमानत: 60.5 मेगावाट है, जिसके लिए कम से कम एक 132 केवी जीएसएस के अनुरूप भार की

रीको में नया 33/11 केवी जीएसएस लगाने की स्वीकृति जारी की है।

आवश्यकता थी। लघु उद्योग भारती ने तत्काल रिको प्रबंध निदेशक शिवप्रसाद नकाते से मुलाकात कर विकट समस्या के संदर्भ में अवगत कराया। रीको निदेशक ने जायज समस्या के समाधान के लिये आश्वस्त किया की राज्य सरकार की औधोगिक नीति मुताबिक विद्युत विभाग को जमीन उपलब्ध करा दी जायेगी। जमीन मिलने पर विद्युत विभाग द्वारा नया जीएसएस लगाने पर मार्बल उधमियों ने सहयोग व्यक्त किया है। शिष्टमंडल में राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम ओझा, राष्ट्रीय सचिव नरेश पारीक, प्रदेशाध्यक्ष शांतिलाल बालड़, उपाध्यक्ष मुकेश अग्रवाल, महेंद्र खुराना, नटवरलाल अजमेरा, प्रांत सह सचिव दीपक शर्मा व किशनगढ़ अध्यक्ष उमेश गोयल उपस्थित रहे।

ग्रामीण की मौत को हत्या बताते हुये लोगों ने जाम लगाया

परिजनों ने मौत को हत्या बताते हुये शव लेने से इंकार कर दिया

भीलवाड़ा, (निसं)। बदनौर थाने के गायत्री नगर में रहने वाले एक ग्रामीण की गुजरात में हुई संदिग्ध मौत को हत्या बताते हुये परिजनों व ग्रामीणों ने बदनौर-भीलवाड़ा मार्ग पर जाम लगा प्रदर्शन शुरू कर दिया। इसके चलते मार्ग पर लम्बा जाम लग गया।

■ ठेकेदार के साथ कुआं खुदाई कार्य के लिए गुजरात गया था, जहां उसकी मौत हो गई

बदनौर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, परा पंचायत के गायत्री नगर गांव का महाराम (43) पुत्र लालु रैगर, ठेकेदार मूलचंद गुर्जर के साथ कुआं खुदाई कार्य के लिए गुजरात गया था, जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि ठेकेदार वहीं पोस्टमार्टम कराने के बाद उसका शव लेकर आज गायत्री नगर आ गया, जहां परिजनों ने महाराम की मौत को हत्या बताते हुये शव लेने से इंकार कर बदनौर बायपास स्थित ब्यावर-भीलवाड़ा मार्ग पर जाम लगा दिया। सैकड़ों की संख्या में महिलाएं व पुरुष हाइवे पर बैठ गये, जिसके चलते यातायात बाधित हो गया। सूचना पर पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे और प्रदर्शन कर जाम लगाने वाले ग्रामीणों से समझाइश शुरू की। पुलिस का कहना है कि करीब एक घंटे बाद जाम खुल गया, लेकिन अभी प्रदर्शन कर रहे परिजन व ग्रामीण मौके पर ही जमा हैं और मुआवजे की मांग कर रहे हैं। उधर, ठेकेदार ने पुलिस को बताया कि महाराम रात में सो रहा था, जो सुबह नहीं उठा। उसकी मौत साइलेंट अटेक से हुई है। फिलहाल दोनों पक्षों के बीच वार्ता चल रही है।

सैकड़ों की संख्या में महिला व पुरुषों ने हाइवे पर जाम लगा दिया

रैली निकाली

मसूदा, (निसं)। शनिवार को उच्च अंक प्राप्त होनहार बालिकाओं का विद्यालय की ओर से सम्मान किया। कक्षा 12 की टॉपर छात्राऐं तनुश्री रावत (92.1), प्रवीणा बानो (861) माही सिंह सोलंकी (81 प्रतिशत)व कक्षा 10 की छात्राऐं सृष्टि जैयलिया (84 प्रतिशत), मुस्कान (83 प्रतिशत), एवं जन्नत बानो (820/0) का किया सम्मानबोर्ड परिक्षा में श्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाली मसूदा के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं का शनिवार को विद्यालय परिवार की ओर से सम्मान किया गया। मसूदा की राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाचार्य भानुमति सहाय ने बताया कि विद्यालय की विद्यालय की कक्षा 12 की टॉपर छात्राऐं तनुश्री रावत (92.1), प्रवीणा बानो (861) माही सिंह सोलंकी (81 प्रतिशत) व कक्षा 10 की छात्राऐं सृष्टि जैयलिया (84 प्रतिशत), मुस्कान (83प्रतिशत), जन्नत बानो (82) का माला पहनाकर स्वागत-सम्मान किया गया एवं विद्यालय परिवार द्वारा पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सम्मानपूर्वक ढोल धमाका के साथ गांव में रैली निकाली गई। संस्था प्रधान भानुमति सहाय ने रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। रैली के दौरान विद्यालय की टॉपर होनहार बालिकाओं द्वारा बोर्ड परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने से आमजन को अवगत कराया वहीं गाँव के बच्चों को सरकारी स्कूल में मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी दी।

समाजसेवी गोपाल यादव की पुण्यतिथि पर पोधारोपण किया

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। महावीर व्यायाम शाला आजाद नगर द्वारा गोपाल गौशाला नक्षत्र वन में पूर्व पार्षद समाजसेवी गोपाल यादव की पुण्यतिथि श्रद्धा पूर्वक मनाई गई।

काचरिया पीठाधिश्वर डॉ जयकृष्ण देवाचार्य के सानिध्य में पूर्व विधायक नाथूराम सिनोदिया, सभापति दिनेश सिंह राठौड़, यादव समाज अध्यक्ष शंकर यादव, पार्षद धन्नालाल यादव, पंचायत समिति सदस्य रवि सिनोदिया, पूसाराम पिड़ियार, नक्षत्र वन अध्यक्ष हाथीराम कुमावत, गोपाल गौशाला अध्यक्ष नेमीचंद जोशी, उपाध्यक्ष परमेन्द्र जोशी ने गौमाता की पूजा अर्चना कर मय टी गार्ड 101 पौधे लगाये। पार्षद महेंद्र यादव ने बताया की पिताजी की पुण्यतिथि पर परोपकारी कार्य के अलावा बड़ी संख्या में नीम, पीपल, बड़, गुलर, बीलपत्र, अशोक के वृक्ष लगाए गये। इस दौरान गोपाल यादव भाया, घीसालाल यादव, तेजमल प्रजापत, सुखदेव सिंह, एडवोकेट राजेश गुर्जर, दीपक बिड़ला, श्रीजल शर्मा, जगदीश यादव, राजू यादव मामा, तेजपाल बजाज, महिपाल चौधरी, मानसिंह नाथावत, प्रेम यादव, आनंद घरडवाल, कैलाश बगवाडिया, मोतीलाल राईका, शादाब खान, सत्यनारायण नांगल, नरेन्द्र कुमावत, महावीर मालाकार, धर्मेन्द्र गुर्जर, राजेन्द्र गुर्जर, सतीश पारासर, राजू राबड़, भवानी सिंह, चेतन शर्मा, गोगा गुर्जर, दिनेश वैष्णव, प्रदीप वैष्णव, आशीष शर्मा, अनिल यादव, राकेश यादव, हरि यादव, लालचंद यादव, कैलाश यादव, अंकित जोशी, नाहर सिंह, राकेश कुमावत, हर्ष शर्मा, बलवीर बंजारा, विजय पोषक, गोपाल वैष्णव, दिनेश यादव, देवानन्द यादव, हरि गोविन्द राईका, देवा गुर्जर, पवन वैष्णव, जयसिंह यादव सहित अनेक पर्यावरण प्रेमी मौजूद रहे। संचालन नेमीचंद जोशी ने किया।

गोपाल गौशाला नक्षत्र वन में पूर्व पार्षद समाजसेवी गोपाल यादव की पुण्यतिथि श्रद्धा पूर्वक मनाई गई।

मैं मानद कप्तान जीतू राय, एसएम, वीएसएम, ओलंपियन निशानेबाज, पद्मश्री प्राप्त, ध्यानचंद खेल रत्न और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त। मैं आपको बताना चाहता हूं कि भारतीय सेना के साथ मेरा 17 साल छह महीने का साथ एक जुलाई 2024 को खत्म हो गया। - जीतू राय

एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता, अपने रिटायर की घोषणा करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — रियान पराग

शुभमन गिल की कप्तानी भारत की युवा क्रिकेट टीम जिम्बाब्वे के दौरे पर है। जहां दोनों टीमों के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का आगाज हो चुका है। वहीं जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। इस दौरान तीन खिलाड़ियों ने भारत के लिए डेब्यू किया है। इसमें रियान पराग, ध्रुव जुरेल और अभिषेक शर्मा का नाम शामिल है। बता दें कि, ये तीनों खिलाडी घरेलू क्रिकेट के साथ-साथ आईपीएल में भी शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। रियान पराग और अभिषेक शर्मा ने आईपीएल 2024 में धमाकेदार प्रदर्शन किया था।

क्या आप जानते हैं ?... जिम्बाब्वे के तातेन्द्रा तेबु ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टैस्ट कप्तान बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

जिम्बाब्वे के खिलाफ 116 रन नहीं बना सके वर्ल्ड चैम्पियन

भारत पहले टी-20 मैच में 13 रन से हारा, रजा और चतारा को 3-3 विकेट

हरारे, 6 जुलाई। टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के एक हफ्ते बाद भारत को जिम्बाब्वे से हार का सामना करना पड़ गया। टीम इंडिया को जिम्बाब्वे ने 5 मैचों की टी-20 सीरीज के पहले मुकाबले में 13 रन से हराया।

हरारे में भारतीय टीम 116 रन का टारगेट चेज नहीं कर सकी। टीम इंडिया के खिलाफ टी-20 इतिहास का सबसे छोटा स्कोर डिफेंड हुआ है। टीम के कप्तान सिकंदर रजा और तेंदाई चतारा ने 3-3 विकेट लिए। शनिवार को भारत ने टॉस जीतकर फील्डिंग चुनी। जिम्बाब्वे ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 115 रन बनाए। विकेटकीपर क्लाइव मदांदे ने नाबाद 29 रन बनाए, उन्होंने 10वें विकेट के लिए तेंदाई चतारा के साथ 25 रन की अहम पार्टनरशिप की थी। टीम इंडिया 19.5 ओवर में 102 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। कप्तान शुभमन गिल ने सबसे ज्यादा 31 रन बनाए। वॉशिंगटन सुंदर आखिर में 27 रन बनाकर आउट हुए। आवेश खान ने 16 रन का योगदान दिया। बाकी 8 कोई भी बैटर 7 से ज्यादा रन नहीं बना सका, हालांकि इस टीम में वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम का कोई खिलाड़ी शामिल नहीं रहा।

भांवरी-ओलिवेटी की जोड़ी विम्बलडन से हुई बाहर

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के युकी भांबरी और फ्रांस के उनके जोड़ीदार अल्बानो ओलिवेटी जर्मनी के केविन क्राविएट्ज़ और टिम पुएट्ज़ से तीन सेटों में हारने के बाद विंबलडन टेनिस चैंपियनशिप के पुरुष युगल के दूसरे दौर से बाहर हो गए। भांबरी और ओलिवेटी की जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की और पहला सेट जीतकर बढ़त बनाई लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख पाए और आठवीं वरीयता प्राप्त जर्मन जोड़ी से 2 घंटे 5 मिनट तक चले मैच में6-4 4-6 3-6 से हार गए। भांबरी और ओलिवेटी ने पहले दौर में कजाखस्तान के अलेक्जेंडर बुब्लिक और अलेक्जेंडर शेवचेंको को हराया था। भारत की निगाहें अब रोहन बोपन्ना पर टिकी हैं जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एबडेन के साथ जोड़ी बनाई है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन और यहां दूसरी वरीयता प्राप्त यह जोड़ी दूसरे दौर में जर्मनी के हेंड्रिक जेबेंस और कॉन्स्टेंटिन फ्रैंटजेन से भिड़ेगी। ओलंपिक में जगह बना चुके सुमित नागल और एन श्रीराम पहले ही टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे।

इंडिया-पाकिस्तान मैच का क्रेज बढ़ा, 23 हजार टिकट बिके

एजबेस्टन, 6 जुलाई। भारत और पाकिस्तान मैच को लेकर फैंस की दीवानगी हर तरफ देखने को मिलती है। किसी भी खेल में इन देशों की टीमें जब आमने-सामने होती हैं तो मुकाबला काफी दिलचस्प हो जाता है। एक बार फिर फैंस को अपने चहेते खिलाड़ियों को खेलते हुए देखना का मौका मिलने वाला है। दरअसल, इंग्लैंड में वर्ल्ड चैंपियंस ऑफ लीजेंड्स 2024 खेली जा रही है। जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सी ले रही हैं। शनिवार को भारतीय चैंपियन और पाकिस्तान चैंपियन के बीच हाईवोल्टेज मुकाबला होने जा रहा है। इस मैच में भारत के पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह, सुरेश रैना, हरभजन सिंह, आरपी सिंह, इरफान पठान जैसे खिलाड़ी मौजूद रहेंगे। वहीं पाकिस्तान की ओर से शाहिद अफरीदी, यूनिस खान, शोएब मलिक, मिस्बाह उल हक मैच का हिस्सा होंगे। एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित वर्ल्ड चैंपियनिप ऑफ लीजेंड्स मैच के लिए सभी 23000 सीटें बिक चुकी हैं। डब्ल्यूसीएल की आधिकारिक विज्ञिप्त के अनुसार 3 जुलाई को एजबेस्टन में शुरू हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स 18 जुलाई तक चलेगी। इंडिया चैंपियंस के खिलाड़ी सुरेश रैना ने कहा कि, पाकिस्तान के साथ खेलना हमेशा सम्मान की बात होती है और अब आज का मैच कोई अपवाद नहीं है। मैदान पर हमारी टीम जोश से भरी हुई है और अपना बेस्ट देने के लिए तैयार है। हमें उम्मीद है कि हमारे प्रदर्शन से फैंस को गर्व महसूस होगा।

भारत - युवराज सिंह (कप्तान), हरभजन सिंह, सुरेश रैना, इरफान पठान, यूसुफ पठान, रॉबिन उथप्पा, अंबाती रायुडू, गुरकीरत मान, राहुल शर्मा, नमन ओझा, राहुल शुक्ला, आरपी सिंह, विनय कुमार, धवल कुलकर्णी, सौरभ तिवारी, अनुरीत सिंह, पवन नेगी।

पुर्तगाल को हराकर फ्रांस सेमीफाइनल में पहुंचा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। फ्रांस ने पुर्तगाल को पेनल्टी शूटआउट में 5-3 से हराकर यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2024) के सेमीफाइनल में जगह बनाई और क्रिस्टियानो रोनाल्डो का खिताब के साथ टूर्नामेंट से विदाई लेने का सपना तोड़ दिया। इस मुकाबले को रोनाल्डो बनाम काइलियन एमबापे के बीच जंग के रूप में देखा जा रहा था लेकिन आखिर में फ्रांसीसी खिलाड़ी अपने आदर्श फुटबॉलर पर भारी पड़ा। दोनों टीम ने एक दूसरे को कड़ी चुनौती दी लेकिन अतिरिक्त समय तक भी कोई टीम गोल नहीं कर पाई। इसके बाद पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया जिसमें पुर्तगाल के जोआओ फेलिक्स का शॉट गोल पोस्ट से टकरा गया। इसके बाद थियो हर्नांडेज़ ने निर्णायक किक को गोल में बदलकर फ्रांस को सेमीफाइनल में पहुंचा दिया। फ्रांस को यूरो 2021 के अंतिम 16 में और विश्व कप 2022 के फाइनल में पेनल्टी शूटआउट में हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन यहां किस्मत उसके साथ थी। पुर्तगाल की इस हार से 39 वर्षीय रोनाल्डो ने यूरोपीय चैंपियनशिप से भी विदा ली। वह पहले ही घोषणा कर चुके थे कि वह आखिरी बार इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे हैं। रोनाल्डो ने रिकॉर्ड छह बार यूरोपीय चैंपियनशिप में हिस्सा लिया। फ्रांस सेमीफाइनल में स्पेन से भिड़ेगा जिसने एक अन्य क्वार्टर फाइनल मैच में मेजबान जर्मनी को हराया।

चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए पाक नहीं जाएंगी टीम इंडिया

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 2025 संस्करण में हिस्सा लेने के लिए अगले साल पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मेन इन ब्लू आठ-टीम आईसीसी इवेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगा, जो 19 फरवरी से 9 मार्च तक खेला जाएगा। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, भारत की पाकिस्तान यात्रा के बारे में कोई भी फैसला भारत सरकार द्वारा लिया जाएगा। सूत्र ने बताया कि हालांकि टूर्नामेंट के विवरण पर अभी तक चर्चा नहीं की गई है, लेकिन इसकी बहुत कम संभावना है कि भारतीय टीम पाकिस्तान की यात्रा करेगी। अंततः निर्णय भारत सरकार पर निर्भर है। हालाँकि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) इस मुद्दे को इस महीने श्रीलंका में होने वाली आईसीसी बैठक में उठाने की योजना बना रहा है। आगे कहा गया है कि इस मामले पर सरकार का निर्णय अंतिम होगा, क्योंकि हमने अभी तक आंतरिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की है। चूंकि यह एक आईसीसी इवेंट है, इसलिए हमारे पास कोई भी एकतरफा निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। हालाँकि, अगली बैठक के दौरान अधिक विवरण सामने आ सकते हैं। भारत ने 2008 के बाद से पाकिस्तान की यात्रा नहीं की है। पिछले 16 वर्षों में, केवल एक बार इन दोनों टीमों ने एक-दूसरे के खिलाफ द्विपक्षीय श्रृंखला खेली है, और वह 2012-13 में हुई थी। भारत को पिछले साल एशिया कप में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तान जाना था, लेकिन दोनों देशों के बीच तनाव के कारण टूर्नामेंट को पाकिस्तान से बाहर स्थानांतरित कर दिया गया और फाइनल सहित भारत के मैच श्रीलंका में खेले गए। हालाँकि, भारत के पाकिस्तान दौरे को छोड़ने के फैसले के बावजूद, पाकिस्तान ने पुरुष एकदिवसीय विश्व कप 2023 में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की और हैदराबाद, अहमदाबाद, चेन्नई, बेंगलुरु और कोलकाता में मैच खेले।

पहले मैच में हार के बाद राधा यादव का बयान, कहा- हमने गेंदबाजी में कुछ गलतियां की

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय स्पिनर राधा यादव ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 12 रन की हार के बाद स्वीकार किया कि उनके गेंदबाजों ने कुछ गलतियां की जिसका टीम को खामियाजा भुगतना पड़ा।। तजमिन ब्रिट्स (81) और मारिजान कैप (57) ने भारतीय गेंदबाजों की एक नहीं चलने दी जिससे दक्षिण अफ्रीका चार विकेट पर 189 रन बनाने में सफल रहा।

इसके जवाब में भारतीय टीम चार विकेट पर 177 रन ही बना पाई। राधा ने मैच के बाद संवाददाताओं से कहा,''यह जानना महत्वपूर्ण था कि इस विकेट पर किस लेंथ और किस गति से गेंदबाजी करनी है। हमने गेंदबाजी इकाई के रूप में कुछ गलतियां की। हमने उन्हें 10 से 15 रन अधिक बनाने दिए। हमें उन्हें यॉर्कर लेंथ पर गेंद करनी चाहिए थी।'' उन्होंने रविवार को होने वाले दूसरे मैच के बारे में कहा,''हमें अपनी रणनीति पर अमल करना होगा और जल्द ही विकेट के व्यवहार को समझना होगा। इससे हमारे लिए काम आसान हो जाएगा।'' दक्षिण अफ्रीका को इससे पहले वनडे श्रृंखला और एकमात्र टेस्ट मैच में हार का सामना करना पड़ा था और उसकी स्टार बल्लेबाज तज़मिन ब्रिट्स ने कहा कि उनकी टीम को इस जीत की सख्त जरूरत थी जिससे उनका अगले साल बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए आत्मविश्वास बढ़ेगा।

ब्रिट्स ने कहा,''हमें इस तरह की जीत और टीम में आत्मविश्वास बढ़ाने की सख्त जरूरत है। इस तरह के आत्मविश्वास से हम न केवल सेमीफाइनल में जगह बना सकते हैं बल्कि विश्व कप भी जीत सकते हैं। इस मैच में जीत दर्ज करना शानदार रहा लेकिन अगले दो मैच जीतना और बेहतर होगा।

ओलंपिक की तैयारी के लिए पेरिस डायमंड लीग में विश्व स्तरीय खिलाड़ियों के सामने होंगे साबले, जेना

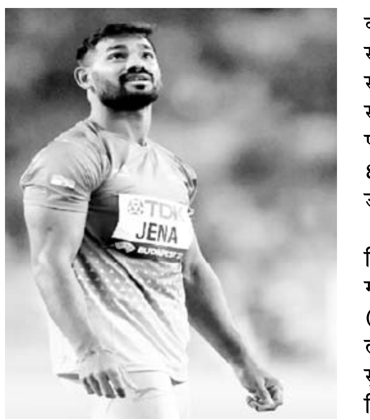

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के शीर्ष स्टीपलचेस एथलीट अविनाश साबले और भाला फेंक खिलाड़ी किशोर जेना रविवार को एक दिवसीय डायमंड लीग के पेरिस चरण में अपनी ओलंपिक तैयारियों को बेहतर करने की उम्मीद करेंगे। मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने पिछले कुछ समय से परेशान कर रही जांघ की समस्या के कारण इसमें हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है।

साबले और जेना दोनों ही फॉर्म में नहीं हैं और उन्होंने ओलंपिक से पहले ज्यादा प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं लिया है। पर अब वे पेरिस की परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की कोशिश करेंगे। ओलंपिक में एथलेटिक्स स्पर्धायें एक अगस्त से शुरू होंगी। 29 वर्षीय साबले ने अभी तक दो 3000 मीटर स्टीपलचेस स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। उन्होंने पोर्टलैंड में 8:21.85 और पंचकुला में 8:31.75 का समय निकाला था जबकि उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय 8:11.20 है।

एशियाई खेलों के मौजूदा स्वर्ण पदक विजेता ने कहा, ''मैंने पिछले दो साल में गलतियां की हैं। मैं दो विश्व चैंपियनशिप (2022 और 2023) में पूरी तरह फिट था। लेकिन दोनों में अच्छा नहीं कर सका। मैं सुधार करना चाहता हूं और उम्मीद करता हूं कि यह मेरा सर्वश्रेष्ठ ओलंपिकहोगा।''

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की संगीत सेरेमनी में इन क्रिकेटर्स ने की शिरकत

मुंबई, 6 जुलाई। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट 12 जुलाई को शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं, लेकिन उनकी शादी से पहले की रस्में मार्च से ही चल रही हैं। अंबानी परिवार ने शुक्रवार को नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर में इस कपल के लिए एक भव्य संगीत समारोह का आयोजन किया। जिसमें बॉलीवुड सेलिब्रिटी के साथ क्रिकेटर्स ने भी शिरकत की। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के संगीत समारोह में टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतने वाले सूर्युकमार यादव और हार्दिक पंड्या भी नजर आए। हालांकि, हार्दिक इस दौरान अपनी भाभी पंखुड़ी भाई क्रुणाल और सहयोगी खिलाड़ी ईशान किशन के साथ नजर आए।

म्यांमा के खिलाफ मैत्री मैचों के लिए भारत की 23 सदस्यीय महिला टीम की घोषणा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने शनिवार को म्यांमा के खिलाफ यांगून में नौ और 12 जुलाई को होने वाले दो मैत्री मैचों के लिए 23 सदस्यीय सीनियर महिला टीम की घोषणा की।

मुख्य कोच चाओबा देवी ने एआईएफएफ की विज्ञिप्त में कहा, ''टीम में सीनियर और जूनियर खिलाड़ियों का मिश्रण है। मैं टीम के संयोजन से संतुष्ट हूं। पिछले महीने उज्बेकिस्तान के साथ खेलने के बाद हमने 10 दिन अंदर अपना राष्ट्रीय शिविर शुरू कर दिया। ''

उन्होंने कहा, ''सभी खिलाड़ी फिट हैं जो अच्छी बात है। खिलाड़ी अपने क्लबों में ट्रेनिंग ले रही थीं। भारतीय महिला फुटबॉल टीम का पिछला दौरा उज्बेकिस्तान का जिसमें वह मेजबान टीम से एक मैच में 0-3 से हार गयी थी और दूसरे मैच में 0-0 से ड्रा खेला था।

भारतीय टीम : गोलकीपर: श्रेया हुड्डा, एलंगबाम पंथोई चानू, मैबाम लिनथोइंगम्बी देवी। डिफेंडर: लोइटोंगबाम आशालता देवी, हेमम शिल्की देवी, संजू, वांगखेम लिनथोइंगम्बी देवी, अरुणा बाग।

प्रज्ञाननंदा और गुकेश टाईब्रेकर में हारे, कारुआना ने जीता खिताब

बुखारेस्ट, 6 जुलाई। भारत के आर प्रज्ञाननंदा और डी गुकेश को चार खिलाड़ियों के बीच खेले गए टाइब्रेकर में हार का सामना करना पड़ा जिसमें दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी फैबियानो कारुआना ने तीनों रैपिड गेम जीतकर सुपरबेट क्लासिक में अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। कारुआना क्लासिकल प्रारूप में नीदरलैंड के अनीश गिरी से हार गए, जिससे मुकाबला रोचक बन गया क्योंकि गुकेश, प्रज्ञाननंदा और फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा सभी उनकी बराबरी पर पहुंच गए।

प्रज्ञाननंदा मुख्य बाजी में अलीरेजा के सामने एक समय बेहद मुश्किल स्थिति में फंसे हुए थे। यदि फ्रांसीसी खिलाड़ी क्लासिकल दौर की इस बाजी को जीत जाता तो फिर वह कारुआना से आगे निकल जाते और विजेता का फैसला करने के लिए टाइब्रेकर की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन कारुआना हार गए, जबकि गुकेश और प्रज्ञाननंदा ने अपनी अपनी बाजियां ड्रॉ खेली जिससे विजेता का फैसला करने के लिए चार खिलाड़ियों के बीच टाइब्रेकर की स्थिति बन गई। कारुआना ने दिखाया कि आखिर उन्हें क्यों टाइब्रेकर का मास्टर कहा जाता है।

उन्होंने साबित कर दिया कि वे युवा पीढ़ी से बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। अमेरिका के इस खिलाड़ी ने टाइब्रेकर में अपने तीनों प्रतिद्वंदियों गुकेश, प्रज्ञाननंदा और अलीरेजा को हराकर 68500 अमेरिकी डॉलर का पहला पुरस्कार जीता।

इससे पहले प्रज्ञाननंदा टूर्नामेंट में अपनी पहली हार की तरफ बढ़ रहे थे लेकिन अलीरेजा की एक गलती का फायदा उठाकर वह बाजी ड्रा करने में सफल रहे। गुकेश ने वेस्ली सो के साथ अंक बांटकर टाइब्रेकर में खेलने का हक पाया था।

माही के बर्थडे पर बनाया 100 फीट ऊंचा कट आउट

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के 43वें जन्मदिन के मौके पर फैंस की दिवानगी देखते ही बन रही है। अपने थला के जन्मदिन के मौके पर

तेलुगु फैंस ने माही का 100 फीट कट आउट बनाया है। रांची में 7 जुलाई 1981को जन्में एमएस धोनी की फैन फॉलोइंग पूरी दुनिया भर में है। आईपीएल के समय हर मैदान धोनी के फैंस से भरे होते हैं। पहले अपनी कप्तानी में टी20 वर्ल्ड कप के अलावा वनडे वर्ल्ड कप और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी देश के नाम की। इसके बाद आईपीएल में भी धोनी का जलवा आज भी बरकरार है। अपनी टीम चेन्नई सुपर किंग्स को पांच बार चैंपियन बनाया है।

घरेलू क्रिकेट सत्र की तैयारियों के लिए आरसीए एडहॉक कमेटी की हुई बैठक

जयपुर 6 जुलाई। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक विधायक जयदीप बिहाणी की अध्यक्षता मे आज जयपुर मे राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी कि मीटिंग आयोजित हुई जिसमे सभी सदस्यो ने बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र से पुर्व राजस्थान के खिलाडियो को उचित तैयारियो व विभिन्न आयु वर्ग कि टीमो के सभावितो हेतु राज्य कि क्रिकेट प्रतियोगिताओ व अन्य गतिविधियो को जल्द से जल्द शुरू करने का निर्णय किया गया। जयदीप बिहाणी जी ने बताया की कमेटी ने आगामी दिनो मे क्रिकेट पिच व मैदान के रखरखाव की अहमियत को देखते हुए 3 दिवसीय मैदान व पिच क्युरेटर सेमीनार के आयोजन सहित राज्य स्तरीय अंडर 19 क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन किये जाने पर सहमती प्रदान की। कमेटी ने आरसीए स्टाफ को आगामी क्रिकेट गतिविधियो की तैयारीयो हेतू निर्देश भी दिए। इस अवसर पर आरसीए एडहॉक कमेटी सयोजक जयदीप बिहाणी व सदस्य विमल शर्मा, रतन सिंह व धर्मवीर सिंह शेखावत मौजुद थे।

वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश में भारतीय टीम की कोच होंगी जयपुर की सुरभि मिश्रा

अच्छी तैयारी, इस बार करेंगे पहले से अच्छा प्रदर्शन

जयपुर, 6 जुलाई। पूर्व अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश खिलाड़ी और भारतीय स्क्वैश टीम की कोच सुरभि मिश्रा का कहना है कि भारतीय टीम अच्छी तैयारी के साथ वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए जा रही है। हम हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। गुलाबी नगर की सुरभि मिश्रा को ह्यूस्टन में 12 से 23 जुलाई तक आयोजित होने वाली डब्ल्यूएसएफ वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम का कोच नियुक्त किया है। सुरभि 8 जुलाई को भारतीय दल के साथ दिल्ली से ह्यूस्टन के लिए उड़ान भरेंगी।

पिछले दस साल से लगातार भारतीय टीम के साथ जुड़ी सुरभि ने मीडिया से बातचीत में कहा कि फेडरेशन की ओर से बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि भारतीय खिलाड़ी अच्छी तैयारी और पूरे फॉर्म में हैं। टीम की प्रैक्टिस और परफॉरमेंस को देखते हुए कह सकते हैं कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में हम पहले के मुकाबले इस बार कई पदक जीतकर लौटेंगे। सुरभि ने कहा कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में दुनिया की शीर्ष टीमें हिस्सा ले रही हैं।

वहां हर मुकाबला चुनौतीपूर्ण होगा। लेकिन हमें पदक जीतने के लिए इजिप्ट, मलेशिया, इंग्लैंड, पाकिस्तान और मेजबान अमेरिका जैसी मजबूती टीमों से टक्कर लेनी होगी। सुरभि की अगुवाई में ही भारतीय दल ने पिछले वर्ष चीन में हुए एशियाई खेलों में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य सहित पांच पदक अपने नाम किए थे। एशियाई खेलों के इतिहास में भारत का स्क्वैश में यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

40 देशों की टीमें खेलेंगी

सुरभि ने बताया कि जूनियर वर्ल्ड कप में 40 देशों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसमें 12 से 17 जुलाई तक व्यक्तिगत चैंपियनशिप के मुकाबले आयोजित किए जाएंगे, वहीं 18 से 23 जुलाई तक टीम चैंपियनशिप के मुकाबले होंगे। चैंपियनशिप में भारत

का 12 सदस्यीय दल हिस्सा लेगा। इसमें बॉयज और गर्ल्स कैटेगरी में छह-छह खिलाड़ी शामिल हैं।

जयपुर का अवलोकित भी टीम में

वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए भारतीय दल में जयपुर के अवलोकित सिंह को भी शामिल किया गया है। सुरभि ने बताया कि अवलोकित को पिछले माह चेन्नई में हुई ट्रॉयल के आधार पर टीम में चुना गया है। अवलोकित वर्तमान में जूनियर रैंकिंग में नम्बर सात के खिलाड़ी हैं। अवलोकित ने स्क्वैश खेल की शुरुआत जयपुर में सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित राजस्थान स्क्वैश एकेडमी से की। वे पिछले कई साल से सुरभि मिश्रा से ही प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस दौरान अवलोकित ने राष्ट्रीय स्तर पर कई खिताब अपने नाम किए हैं।

सुरभि खुद जीत चुकी हैं वर्ल्ड जूनियर में पदक

सुरभि मिश्रा खुद वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में देश के लिए पदक जीत चुकी हैं। उन्होंने बताया कि 2009 में चेन्नई में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में उन्होंने गर्ल्स टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया। यह इस टूर्नामेंट में देश का पहला पदक था। इसी चैंपियनशिप में दीपिका पल्लीकल ने व्यक्तिगत स्पर्धा में भी कांस्य पदक हासिल किया था। उन्होंने बताया कि भारत ने 2012 में कतर में बॉयज टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था। पिछले वर्ष आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में हुई जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत की गर्ल्स टीम शीर्ष आठ में रही, वहीं 2023 में हुई बॉयज जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत ने पांचवां स्थान हासिल किया था।

भारतीय टीम

बॉयज- शौर्य बावा (दिल्ली), युवराज वाधवानी (मुम्बई), अयान वजीरअली (मुम्बई), अरिहन्त के. एस. (तमिलनाडु), अवलोकित सिंह (जयपुर), तवनीत सिंह मूंदड़ा (मध्य प्रदेश)।

गर्ल्स- अनाहत सिंह (दिल्ली), उन्नित त्रिपाठी (उत्तर प्रदेश), निरुपमा दुबे (महाराष्ट्र), शमीना रियाज (तमिलनाडु), टियाना परसरामपुरिया (महाराष्ट्र), सहर नैयर (चंडीगढ़)।

कोच- सुरभि मिश्रा और हरिंदर पाल सिंह संधू।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार कोटा आगमन पर शहर भर में जगह-जगह उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। बिड़ला के स्वागत के लिए शहर भर में स्वागत द्वार बनाए गये तथा स्वागत मंचों के जरिये पुष्प वर्षा भी की गई।

वन रक्षक भर्ती परीक्षा पेपर लीक केस में 11 आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने 2022 में हुई इस परीक्षा के फर्जीवाड़े का खुलासा कर दिया है

- **आरोपियों ने हरेक अभ्यर्थी से 8 लाख रू. लिये थे।**
- **आरोपी मोबाइल में प्रश्न पत्र लाए थे तथा अभ्यर्थियों को बोल-बोलकर जवाब लिखवाए गए थे।**
- **इन सभी अभ्यर्थियों का वन रक्षक पद पर चयन हो गया था।**

बांसवाड़ा, 6 जुलाई (निसं)। पुलिस ने वनरक्षक भर्ती परीक्षा-2022 में पेपर लीक मामले का खुलासा करते हुए 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। महानिरीक्षक पुलिस एस. परिमला, जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाल के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना एवं पुलिस उप अधीक्षक एसओजी बाबूलाल मुरारिया के नेतृत्व में टीम गठित की गयी थी।

जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाल ने बताया कि डमी कैंडिडेट बिठाकर परीक्षा दिलाने के मामले की जाँच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लीव रिजर्व रेंज धनफूल मीना कर रहे थे। जांच के दौरान प्रवीण पुत्र हीरालाल मालवीया, निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा व सविता डोडियार पत्नी प्रवीण मालवीया निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा, को 28 जून को गिरफ्तार किया गया था। अनुसंधान के दौरान प्रवीण मालवीया व उसकी पत्नी सविता डोडियार ने बताया कि वनरक्षक भर्ती सूचना 2020 में निकली थी, जिसकी परीक्षा 13 नवंबर 2022 को दो पारियों में हो रही थी। सकन सिंह खड़िया ने परीक्षा के एक दिन पहले फोन कर बताया कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा में बैठने वाले अभ्यर्थियों से बात कर 8 लाख रुपये प्रति कैंडिडेट की व्यवस्था कर सकते हो तो उनको बुला लो, कल की परीक्षा के पेपर लेकर आयेंगे।

इस पर मालवीया ने भीलकुआ निवासी छगन पारगी के माध्यम से सुक्राम पुत्र रमेश डामोर निवासी बगायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका बड़ोदिया, सुभाष पुत्र रमेश डिंडोर निवासी कोठारिया थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका टिमेड़ा, वीरसिंह पुत्र कन्हैयालाल कटारा निवासी नवागांव थाना कुशलगढ़, हाल अध्यापक राउमावि उलटन धरियावाद, शीला पत्नी ईश्वरलाल पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़ , निरमा पत्नी सुक्राम डामोर निवासी बकायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़ , शिल्पा पत्नी भावचंद मईड़ा निवासी नागदा बड़ी थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक रेंज डूंगरा, संगीता पुत्री पवन कुमार गरासिया निवासी रोहनिया रामसिंह थाना सज्जनगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़ , ईश्वरलाल पुत्र नाथु पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़ को शास्त्री नगर किराये के मकान में बुलाया। तेरह नवंबर की सुबह हरीश उर्फ हीराराम पुत्र सरतनाराम सारण निवासी अरटवाव गुड़ामलानी बाड़मेर व अभिमन्यु सिंह पुत्र हिम्मत सिंह चौहान निवासी चिखला थाना कुआ जिला डूंगरपुर, हाल कनिष्ठ अभियंता शिक्षा विभाग मुख्य खंड शिक्षाधिकारी चिखली जिला डूंगरपुर दोनों घर आये और अपने मोबाइल में लाये परीक्षा का पेपर सभी अभ्यर्थियों को बोलकर हल करवाया जिससे सभी अभ्यर्थियों का वनरक्षक भर्ती 2022 में चयन हो गया। पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस टीम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना, एसओजी पुलिस उप अधीक्षक बाबूलाल मुरारिया, सहायक उपनिरीक्षक अमरसिंह व चन्द्रवीर सिंह, एसओजी हैड कांस्टेबल संतोष कुमार, एसओजी कांस्टेबल लक्ष्मणलाल, एसओजी चालक कांस्टेबल अरविन्द कुमार, कांस्टेबल कैलाशचंद्र शामिल थे।

दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद कोटा पहुँचे ओम बिड़ला का भव्य स्वागत

हिंडोली से कोटा तक भव्य रोड शो, स्वागतद्वार बनाकर जगह-जगह शानदार स्वागत हुआ

- **रोड शो में शामिल लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर वाली टी शर्ट पहन रखी थीं।**
- **भाजपा के स्थानीय नेताओं व कार्यकर्ताओं ने स्पीकर बिड़ला को 51 किलो का पुष्पहार पहनाया तथा साफा पहनाकर शाल ओढ़ाया।**
- **बिड़ला के साथ, प्रदेश सरकार के मंत्री मदन दिलावर, हीरालाल नागर तथा क्षेत्र में भाजपा विधायकों ने भी रोड शो में शिरकत की।**

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार अपने लोकसभा क्षेत्र कोटा-बूंदी पहुंचने पर ओम बिड़ला का भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। हैलिकॉप्टर से बूंदी के हिंडोली विधानसभा क्षेत्र पहुंचने के बाद हिंडोली से बूंदी तक पहले चरण का रोड शो हुआ।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला खुली जीप में भाजपा के स्थानीय नेताओं के आम जनता का अभिवादन करते हुए हिंडोली से बूंदी की तरफ रवाना हुए। उनके स्वागत में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं और आमजन की भीड़ उमड़ी, साथ में गाड़ियों का भी लंबा काफिला था। जगह-जगह उनका फूल बरसाकर और मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। बिड़ला के रोड शो का दूसरा चरण कोटा में हुआ। ओम बिड़ला लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने वाले राजस्थान के दूसरे नेता हैं। इससे पहले कांग्रेस के बलराम जाखड़ कांग्रेस की सरकार के वक्त लोकसभा के दो बार अध्यक्ष बने थे। दूसरी बार इस पद पर काबिज होने से ओम बिरला राजस्थान में भाजपा का बड़ा चेहरा बन कर उभरे हैं।

कोटा संवाददाता के अनुसार, कोटा शहर में बिड़ला के स्वागत के लिए प्रवेश द्वार लगाए गए। प्रवेश द्वार के दोनों तरफ़ से पन्नियों की बरसात और नगाड़ों से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं, पुरूषों ने सिर पर साफे बांधे हुए थे और कई लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर छपी टीशर्ट पहन रखी थी। लोगों ने इस अवसर को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाया। कोटा शहर में विभिन्न संस्थाओं, व्यापारियों, जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों ने लोकसभा अध्यक्ष का जोश के साथ स्वागत किया। जगह-जगह पर स्वागत द्वार व मंच बनाए गए और आतिशबाजी भी की गई।

कोटा प्रभारी मंत्री गौतम कुमार दक, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा, प्रदेश मंत्री अनुसुइया, शिक्षामंत्री मदन दिलावर, ऊर्जामंत्री हीरालाल नागर, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, लाडपुरा विधायक कल्पना देवी, पूर्व कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, रामगोपाल बैरवा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने लोकसभाध्यक्ष को साफा, शॉल, 51 किलो का पुष्पहार एवं श्रीराम मंदिर का चिन्ह देकर उनका भव्य स्वागत किया।

कश्मीर में दो...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुठभेड़ कुलगाम के मोदरगाम गांव में उस समय शुरू हुई जब सुरक्षा बलों की संयुक्त टीमें आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके में घेराबंदी और तलाश अभियान (कासो) चला रही थीं।

एक सुरक्षा अधिकारी ने कहा,जब सेना की संयुक्त टीम पर गोलीबारी शुरू हुई तो अभियान एक मुठभेड़ में बदल गया। शुरुआती गोलीबारी में सेना की एलीट यूनिट का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल जवान को एक चिकित्सा सुविधा में ले जाया गया जहाँ उसकी मौत हो गई।

केन्द्रीय बजट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विशेष सत्र आयोजित किया गया था। नए सांसदों ने शपथ ली और 27 जून को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित किया।

मु.मंत्री भजनलाल ने जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजैक्ट्स का निरीक्षण किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को हीरापुरा बस टर्मिनल (अजमेर रोड) पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मु.मंत्री ने, मानसरोवर से अजमेर रोड तक मैट्रो विस्तार के निर्माण कार्यों का भी अवलोकन कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।

- **मुख्यमंत्री ने हीरापुरा बस टर्मिनल तथा जयपुर मैट्रो फेज़ प्रथम-डी के निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।**
- **सांगानेर में, मु.मंत्री ने 300 बेड की क्षमता वाले अस्पताल का निर्माण कार्य शीर्घ करने का निर्देश दिया।**
- **मु.मंत्री आर.यू.एच.एस. भी गए तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया और वहाँ भर्ती मरीजों से भी बात की।**

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आमजन के आवागमन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का धरातल पर जायजा लेने के लिए शनिवार को जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजेक्ट्स का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों एवं व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों से चर्चा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने सबसे पहले अजमेर रोड स्थित हीरापुरा बस टर्मिनल पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से प्रोजेक्ट के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यात्रियों के लिए पेयजल की उचित व्यवस्था, बैठने हेतु छायादार स्थान, सफाई व्यवस्था सहित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए ताकि अगस्त माह से बसों का संचालन प्रारम्भ किया जा सके।

मुख्यमंत्री शर्मा ने जयपुर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम के अधिकारियों को मानसून में भारी बारिश से होने वाली समस्याओं से बचाव के लिए पूर्व में ही माकूल व्यवस्था करने के निर्देश दिए, जिससे आमजन को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। शर्मा ने मानसरोवर में जयपुर मेट्रो फेज 1-डी के तहत मानसरोवर से अजमेर रोड चौराहा तक मेट्रो विस्तार के प्रगतिरत निर्माण कार्य का अवलोकन किया।

इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए शीघ्र इस प्रोजेक्ट को पूर्ण किया जाए। उन्होंने नवनिर्मित हीरापुरा बस टर्मिनल तक मेट्रो सुविधा के विस्तार के संबंध में चर्चा की। साथ ही, मेट्रो के फेज-2 के लिए रूट निर्धारित करने तथा डीपीआर बनाने के लिए टेण्डर शीघ्र किए जाने के संबंध में निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सांगानेर में खुली जेल का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने 300 बेडेड अस्पताल बनाने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को एक सप्ताह में भूमि आवंटन की कार्यवाही पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस कार्य की शीघ्र डीपीआर तैयार करें, जिससे दीपावली से पहले निर्माण कार्य का शिलान्यास किया जा सके।

शर्मा इसके बाद राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस (आरयूएचएस) पहुंचे। यहां उन्होंने मॉडर्न डायग्नोस्टिक सेंटर, आईसीयू कॉम्प्लेक्स, आई ओटी यूनिट का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को आरयूएचएस में चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने, चिकित्सकों की नियुक्ति करने, मरीजों के परिजनों के ठहरने की उचित व्यवस्था करने के संबंध में निर्देश दिए।

राज्यपाल व विधानसभा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मीडिया हैण्डिल "एक्स" पर डाली गई एक पोस्ट में संविधान के एक प्रावधान का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि कोई विधायक, सदन का विधिवत सदस्य बनने से पूर्व शपथ अथवा प्रक्रियानुसार पुष्टि के लिए राज्यपाल या उनकी तरफ से इस कार्य के लिए नियुक्त किए गए किसी व्यक्ति के समक्ष अपनी सहमति प्रकट करता है। उन्होंने स्पीकर द्वारा दिए अन्य नियमों के हवाले भी खारिज करते हुए लिखा कि "क्या कोई भी नियम संविधान से ऊपर हो सकता है?" लेकिन राज्यपाल ने जब शपथ दिलाने अथवा यह जिम्मेदारी किसी और को देने से इंकार कर दिया था, तब पिछले हफ्ते बनर्जी और सरकार विधानसभा भवन के बाहर धरने पर बैठ गए थे।

किन्तु, राज्यपाल ने आज सुबह ही एक फरमान जारी कर डेपुटी स्पीकर को शपथ दिलाने के लिए अधिकृत किया था। हालांकि, स्पीकर ने तब तक विधानसभा का एक विशेष सत्र आयोजित करने का आदेश दे चुके थे। जिसमें यह घोषणा की गई कि सदन की कार्यवाही का संचालन सिर्फ राज्यपाल की सहमति पर ही निर्भर नहीं हो सकता। स्पीकर बिमान बनर्जी ने राष्ट्रपति की मदद भी मांगी और राज्यपाल पर अहंकारपूर्ण बर्ताव का आरोप लगाया। गतिरोध तब और गहरा गया जब राज्यपाल ने उक्त दोनों विधायकों को शपथ ग्रहण के लिए अपने आवास पर आमंत्रित किया। स्पीकर व तृणमूल ने इस बात पर जोर दिया कि बोस को विधानसभा में आना चाहिए। बनर्जी ने कहा, "हम उनका व संविधान का सम्मान करते हैं, परन्तु वे हमें आदर नहीं दे रहे हैं। उन्हें विधानसभा में आना चाहिए और शपथ ग्रहण करना चाहिए अथवा प्राधिकार अध्यक्ष को प्रदान किया जाना चाहिए। हम यहाँ संवैधानिक तौर पर बैठे हुए हैं- हम निर्वाचित हैं, आपकी तरह मनोनीत पद पर नहीं है।" शुभेन्दु अधिकारी ने कहा, इस बीच भाजपा ने भी शपथ ग्रहण समारोह की आलोचना की है उसने दावा किया कि उन्हें विशेष सत्र के बारे में नहीं कहा गया था। "मेरे पास इस संबंध में सूचना नहीं थी और कोई नोटिस भी प्राप्त नहीं हुआ था। प्रत्येक राज्य में शिष्टाचार के तौर पर विपक्ष के नेता को बुलाया जाता है परन्तु यहाँ हमसे कोई चर्चा नहीं की गई।" अधिकारी, जो पूर्व में मु.मंत्री ममता बनर्जी के खास सहयोगी रह चुके हैं वो विसं. चुनावों से ठीक कुछ सप्ताह पूर्व भाजपा में शामिल हुए थे वो अब विपक्ष के नेता हैं।

संवैधानिक कानून के जानकार विशेषज्ञों का मत है कि बंगाल के राज्यपाल संवैधानिक रूप से गलत कदम उठा रहे हैं क्योंकि वे अनावश्यक रूप से सिर्फ संकट उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। पहली बात यह है कि उन्होंने शपथ ग्रहण कराने में विलम्ब किया जबकि दोनों विधायक 5 जून को ही चुनावों में जीत चुके थे और उसके बाद यह है कि वे विधायकों को उनके निवास पर शपथ ग्रहण करने के लिए बुला रहे थे जो कि नियमानुसार नहीं है। यह बहुत ही अजीब बात है कि राज्यपाल नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलवाने के लिए उपाध्यक्ष की नियुक्ति करते हैं और अध्यक्ष को नज़रअंदाज करते हैं विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि यह सब झमेला समस्या का संकट उत्पन्न करने के लिए किया जा रहा है।

तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उपस्थिति में कांग्रेस में शामिल होने के बाद, अब पार्टी के नेता व कार्यकर्ता धीरे ही सही परन्तु कांग्रेस में आ रहे हैं। बी.आर.एस. को जोर का झटका उस समय लगा जब शुक्रवार को विधान परिषद के छः एम.एल.सी. नेताओं ने एक प्रायवेट होटल में बैठक की और कांग्रेस में सम्मिलित होने का निर्णय किया। कांग्रेसी सूत्रों के हवाले से खबर है कि "मध्य रात्रि को लगभग 1 बजे ये नेतागण तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष व मुख्यमंत्री ए.रेवन्त रेड्डी के आवास पर पहुंचे थे जो कुछ देर पूर्व ही नई दिल्ली से वापस आए थे, उनसे मिलकर इन नेताओं ने पार्टी में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की।"

रेवन्त रेड्डी ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया और सभी छः नेताओं को तेलंगाना की ए.आई.सी.सी. प्रभारी दीपा दास मुंशी, राज्य के राजस्व मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी एवं पार्टी के अन्य नेताओं की उपस्थिति में पार्टी में शामिल कर लिया। बी.आर.एस. के छः विधायकों द्वारा दलबदल कर कांग्रेस में शामिल होने के बाद 40 सदस्यीय विधान परिषद में सत्ताधारी पार्टी की सदस्य संख्या बढ़कर अब 10 हो गई है जबकि इस विपरीत बी.आर.एस. के विधायकों की संख्या 25 से ङ्टकर 19 रह गई है। इसके अत्तिरिक्त, इसमें चार मनोनीत एम.एल.सी. हैं जिसमें से दो सदस्य ए.आई.एम.आई.एम. से हैं तथा भाजपा एवं पी.आर.टी.यू. दोनों से एक-एक सदस्य हैं और एक निर्दलीय है जबकि दो सीट रिक्त चल रही है।

राज्य विधानसभा में, कांग्रेस पहले ही बी.आर.एस के छः एम.एल.ए. को तोड़ चुकी है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री के.टी. रामाराव ने दलबदल करवाने को लेकर कांग्रेस की आलोचना की। सोशल मीडिया एक्स पर डाली गई एक पोस्ट में के.टी.आर. ने कहा "दलबदल करना कांग्रेस के घोषणा पत्र के खिलाफ जिसने इस मामले को लेकर संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन करने का वादा किया था, जिसमें निर्वाचित सदस्यों के दलबदल कर एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने पर स्वतः अयोग्य करने की मांग की गई है। के. केशव राव ने कांग्रेस में शामिल होने के बाद राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। रामराव ने कहा कि वे इस निर्णय का स्वागत करते हैं परन्तु बी.आर.आस. के उन विधायकों का क्या होगा जिन्होंने दलबदल किया और कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था तथा उन आधा दर्जन अन्य विधायकों का क्या होगा जो दलबदल करके कांग्रेस में सम्मिलित हुए हैं?" के.टी.आर. ने यह भी पूछा और राहुल गांधी पर निशाना साधा कि क्या उन्होंने इसी तरह से संविधान को सही ठहराया है।

के.टी.आर. ने अपने एक्स पोस्ट पर पूछा "यदि आप बी.आ.एस. के विधायकों से इस्तीफा नहीं ले सकते तो आप पर देश कैसे भरोसा करेगा कि कांग्रेस के घोषणा पत्र अनुसार दसवीं अनुसूची में संशोधन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं? यह कैसा न्याय पत्र हैं?" बी.आर.एस. ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनावों में 39 सीटे जीती थी और सत्ता से बाहर हो गई। परन्तु उनकी संख्या छः विधायकों को कांग्रेस में दलबदल कर जाने के बाद कम हो गई और एक एम.एल.ए. की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। 119 सदस्यों वाली विधानसभा में जिस समय विधानसभा का गठन हुआ था कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 65 थी जो अब बढ़कर 71 हो गई है।

गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रकम मिलेगी। श्री शुभम लॉजिस्टिक ने बीकानेर में 29 गोदाम किराये पर लिए और उन्हें ए.एल.पी. के अधीन मानते हुए किराया राशि मात्र 15 प्रतिशत ही भंडारण निगम को दी, इससे विभाग को करीब 6 करोड़ रुपये की हानि हुई।

एम.ओ.यू. में एक शर्त यह भी थी कि, गोदामों में जमा स्टॉक का बीमा श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को ही करवाना था, लेकिन कंपनी ने इंश्योरेंस नहीं कराया, इस कारण करीब 3000 करोड़ रु. स्टॉक बिना किसी बीमा के रखा हुआ था। इस गंभीर लापरवाही के बावजूद कंपनी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। कंपनी द्वारा गोदामों पर स्टाफ तैनात नहीं करने के कारण सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई थी, इनके वेतन के 4 करोड़ रु. कंपनी से वसूले जाने चाहिए थे। मंत्री का आरोप है कि, वेयर हाऊस मैनेजमेंट सिस्टम के लिए डब्ल्यू.ई. एक्सेल सॉफ्टवेयर कंपनी चंडीगढ़ से 3.7 करोड़ रुपये का सॉफ्टवेयर एकल निविदा में खरीदा गया, अगर यह टैंडर खुली शर्तों में होता तो करीब 2.5 करोड़ रु. की बचत होती।

डॉ. किरोडीलाल का कहना है कि गहलोत राज में हुआ यह टैंडर शुरू से ही विवादों में रहा, क्योंकि इसकी शर्तें कुछ इस प्रकार तय की गई थी कि इन दोनों कंपनियों के अलावा कोई इस निविदा में भाग ही नहीं ले सके। हैरानी की बात यह थी कि इस टैंडर के खिलाफ राजस्थान हाईकोर्ट में भी एक याचिका दायर हुई थी, जिस पर अदालत ने टैंडर पर रोक लगा दी थी। इसके बाद तत्कालीन गहलोत सरकार व राज्य भंडारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को टैंडर देने के लिए राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी और अदालत ने कुछ समय के लिए हाईकोर्ट के आदेश पर अस्थाई रोक हटायी थी, इसी बीच विभाग ने कंपनियों के साथ अनुबंध कर लिया। आज भी इस प्रकरण पर अंतिम फैसला आना शेष है।

राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट :- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में कहा गया है कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के क्लॉज 15 में लिखा है कि अनुबंधित कंपनी को सरकार द्वारा निर्धारित गोदामों की 70 प्रतिशत की उपयोगिता सुनिश्चित करनी थी। इस रिपोर्ट में भी माना गया कि इस शर्त की पालना नहीं करने पर, जुलाई 2023 तक राज्य सरकार को इस कंपनी से 64.08 करोड़ रुपये की पेनल्टी वसूलनी जानी थी, लेकिन इस रकम में से मात्र 46.54 करोड़ रु. ही वसूले गए, जबकि 17.64 करोड़ रु. अभी भी बकाया है। खास बात यह है कि दोनों कंपनियों को भंडारण निगम को 24.34 करोड़ रु. की बैंक गारंटी देनी थी, लेकिन इन कंपनियों ने मात्र 22.20 करोड़ रु. ही जमा करवाए। जब लेखाकारों ने भंडारण निगम अधिकारियों से इस बारे में जवाब मांगा तो उन्होंने कहा कि, यह प्रकरण अदालत में आर्बिट्रेशन में है, इसका फैसला लंबित है। लेखाकारों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि, भंडारण निगम का यह जवाब स्वीकार योग्य नहीं है। उन्होंने आगे यह भी टिप्पणी की है कि, जब वर्ष 2021-22 में ही पता चल गया था कि दोनों कंपनियां गोदामों की 70 फीसदी उपयोगिता सुनिश्चित करने में फेल साबित हो ही रही तो फिर वर्ष 2022 से 2024 तक इन कंपनियों के साथ राजस्व साझा का अनुबंध जारी क्यों रखा गया?

ऑडिट रिपोर्ट की शर्त 15 में यह भी तय था कि, भंडारण निगम और श्री शुभम लॉजिस्टिक के बीच राजस्व साझेदारी क्रमशः 71:29 फीसदी की रहेगी, परन्तु यह राजस्व 15:85 के क्रम में मिला। ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि भंडारण निगम ने, श्री शुभम लॉजिस्टिक को 'एग्री लॉजिस्टिकल पार्क' (ए.एल.पी.) में 75.96 करोड़ रु. का बिजनेस दिया, इस कारण कंपनी के राजस्व का प्रतिशत 29 प्रतिशत के बजाय 85 पहुंच गया। इससे पता चलता है कि भंडारण निगम ने इन कंपनियों को जुलाई 2020 से मार्च 2023 के बीच 26.22 करोड़ का अतिरिक्त बिजनेस दिया। उल्लेखनीय है कि ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार कि गोदाम किराया, संधारण व स्टाफ वेतन का 32 प्रतिशत निगम ने दोनों कंपनियों को वसूलने दिया, जो कि करीब 49.74 करोड़ रु. की रकम थी।

जब निगम प्रशासन से लेखाकारों ने इस संदर्भ में पूछताछ की तो उन्होंने जवाब दिया कि, ए.एल.पी. में 85 प्रतिशत बिजनेस देने का फैसला बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्स की मीटिंग में लिया गया था और ऐसा वर्ष 2010 से हो रहा है। लेखाकारों ने इस जवाब को भी संतुष्टिपूर्ण नहीं माना है।

ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया कि, इन दोनों कंपनियों ने गोदामों में रखी गई कृषि उपज की एवज में 2430 करोड़ रु. का अपर्याप्त बीमा कराया, जिससे किसानों को फसल खराबे की स्थिति में भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है। जब इस मुद्दे पर लेखाकारों ने भंडारण निगम से सवाल किया तो जवाब मिला कि प्रशासन ने दोनों कंपनियों को ई-मेल लिखा है और जवाब आने पर ऑडिटर्स को बता दिया जायेगा। लेखाकारों की टिप्पणी है कि निगम प्रशासन का यह जवाब, इंश्योरेंस लागू करवाने का फैलियर साफ जाहिर करता है।

ऑडिट रिपोर्ट में सामने आया है कि, दोनों कंपनियों ने अनुबंध के मुताबिक अतिरिक्त भंडारण क्षमता को बनवाने और उपयोग की एवज में 9.41 करोड़ रु. की अतिरिक्त परफॉरमेंस सिक्यूरिटी राशि जमा नहीं करायी। लेखाकारों को इस मुद्दे पर विभाग ने जवाब दिया है कि, हमने दोनों कंपनियों को कई बार बैंक गारंटी जमा करवाने के लिए पत्र लिखे हैं, लेकिन अभी तक भी यह लंबित है और प्रक्रिया जारी है। ऑडिटर्स ने इस जवाब को भी उपयुक्त नहीं पाया है। ऑडिट रिपोर्ट में टिप्पणी की गई कि एक वर्ष बीतने के बाद भी बैंक गारंटी वसूली नहीं होना भंडारण निगम का एक बड़ा फेलियर है। ऑडिट रिपोर्ट में लिखा गया है कि, गोदामों पर सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने की एवज में कंपनियों से 4.17 करोड़ रु. का वेतन राशि वसूलने में भी भंडारण निगम फेल साबित हुआ है। इसके अलावा भी अन्य कई मदों में करीब 6 करोड़ रु. की वसूली नहीं की गई है।

दोनों कंपनियों की बैंक गारंटी उपलब्ध नहीं कराने और कृषि उपज के स्टॉक का इंश्योरेंस नहीं करवाने और टैंडर की अन्य शर्तों की पालना नहीं करने पर उठे विवाद पर राज्य भंडारण निगम ने इन कंपनियों का भुगतान रोक दिया था। इसके बाद 3 अगस्त 2023 को इन कंपनियों ने भंडारण निगम की सहमति से राजस्थान हाईकोर्ट पहुंचकर आर्बिट्रेटर की नियुक्ति करवाई।

बताया जा रहा है कि आर्बिर्टेटर ने फैसला दिया है कि, भंडारण निगम इन कंपनियों को भुगतान कर दे, इसके बाद कंपनियां भी अपनी शेष बैंक गारंटी विभाग को जमा करवा दें। हैरानी की बात है कि ऑडिटर्स की कड़ी टिप्पणियों के बावजूद भी राज्य भंडारण निगम ने आर्बिट्रेशन" के माध्यम से इस मामले का निपटारा क्यों करना उचित समझा। इससे भी बड़ी ताज्जुब की बात है कि, सी.ए.जी. व अन्य वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट्स में कंपनियों व भंडारण निगम की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े किए जाने के बावजूद भी आर्बिट्रेटर द्वारा इस तरह का अवॉर्ड दिया गया, जिससे प्रतीत होता है कि कंपनियों को बहाल किया जा रहा है। वर्तमान में यह प्रकरण सुप्रीम कोर्ट के समक्ष भी लंबित है। इस प्रकरण में आर्बिट्रेटर द्वारा दिए गए अवॉर्ड को भी राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है।

अमेरिका में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई। फिलाडेल्फिया, बोस्टन और कनेक्टिकट में गोलीबारी की घटनाओं में तीन लोग मारे गए। क्वींस सेक्शन में एक अपार्टमेंट में आठ साल के एक लड़के की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पिछले साल भी स्वतंत्रता दिवस के मौके पर छुट्टी के दिन गोलीबारी में एक दर्जन से ज्यादा लोग मारे गए थे।

काफी रोचक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कश्मीर भू-भाग में आती हैं। भाजपा किसी को भी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करेगी, चुनावों में प्रचार व वोट के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे का इस्तेमाल किया जाएगा।

संभावना है कि भाजपा, पूर्ववर्ती रियासत के डोगरा राजा महाराजा हरिसिंह की विरासत को मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ना चाहेगी जिन्होंने भारत संघ में शामिल होने का फैसला किया था। भजपा पार्टी के प्रचार मुद्दों की रणनीति में पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती को अनन्तनाग-राजौरी के चुनावों में हुए नुकसान को तथा अभी कुछ समय पूर्व समाप्त हुए लोकसभा चुनावों में हार के मुद्दे को भुनाना चाहती है।

भाजपा के करीबी सूत्रों का कहना है कि भाजपा चुनावों में जम्मू व कश्मीर बैंक घोटाला तथा प्रचार में रोशनी घोटाला कांड को भी उठाएगी।

अल्पसंख्यक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को 20 लाख रुपये की छात्रवृति देती है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908